एक प्रति १० रुपए • वार्षिक १०० रुपए

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

अप्रैल २००६ • वर्ष ५६ • अंक ४

With Best Compliments From :

Mironda Trade & Commerce Pvt. Ltd.
Malvika Commercial Pvt. Ltd.
Mercury International
Touchstone Exports

Tower House, 2A Chowringhee Square,
Kolkata - 700069, India.

Phone : (91-33) 2248-3789/2210-8543
2242-9002

Fax : (033) 2248-2856

E-mail : mercintl@yahoo.com

Website: www.touchstoneexports.com

इस अंक में

अनुक्रमणिका-	३
जनवाणी एवं धर्म बनाम दैनिक जीवन	४
सम्पादकीय-	५
अध्यक्ष की कलम से/श्री मोहनलाल तुलस्यान-	७
मारवाड़ी सम्मेलन को भी बदलना होगा/ श्री सीताराम शर्मा	८
जाने कहां गये वो दिन/श्री भानीराम सुरेका-	९
मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य से साक्षात्कार	१०-११
कविता- अभी अधूरी है आजादी/ श्री जुगल किशोर चौधरी-	११
क्या आज की स्वतंत्रता नारी को उत्थान की ओर ले जा रही है?/ स्व. मंजु महेरियो	१२
मारवाड़ी सम्मेलन हमें क्या दिया?/श्री मांगीलाल चौधरी	१३-१४
कविता- हम नदी के साथ-साथ/अज्ञेय	१४
हमारी कैलाश मानसरोवर यात्रा/शांति प्रह्लाद राय अग्रवाल	१५-१७
अंतर्जातीय विवाह कलह के मूल कारण/श्री भीमसेन अग्रवाल	१८
अल्लादीन का चिराग/श्री पुष्कर लाल केडिया	१९-२०
यौवन/श्री बाबू लाल धनानिया	२०

युग पथ चरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन सहित बिहार, पूर्वोत्तर आदि प्रादेशिक सम्मेलनों एवं अखिल भारतवर्षीय मारवड़ी महिला सम्मेलन तथा अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के कार्यक्रमों की रिपोर्टें। २१-२६

समाज विकास

अप्रैल, २००६

वर्ष ५६, अंक ४

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोन-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु।

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता-७०००१३ में मुद्रित।

संपादक : नंदकिशोर जालान

जनवाणी

इस स्तंभ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित हैं।

-सम्पादक

'समाज विकास' निरन्तर मिल रहा है। फरवरी अंक भी अपनी अनेक विशेषताओं के साथ प्रकाशित हुआ है। इसके गंभीर लेख चिन्तन मनन की प्रेरणा देते हैं तो काव्य अभिव्यक्तियां संवेदनशीलता को बढ़ावा देती है। युग बोध के दर्शन भी इसमें होते हैं। आपकी साधना स्तुत्य है।

-डॉ. उदयवीर शर्मा, सम्पादक-वरदा, झुंझुनु (राजस्थान)

समाज विकास फरवरी २००६ अंक मिला। अंक कई दृष्टियों से बहुत महत्वपूर्ण लगा। श्री सुभाष लखोटिया का लेख 'दीन-हीनों' की सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण है वहीं डा. बुधमल शामसुखा का मनोरंजक ललित लेख है। श्री नन्दकिशोर जी जालान का परिवर्तन से संबंधित लेख युगानुकूल है जबकि दीपचन्द नाहटा का लेख समाज को चेतावनी है। श्री भानीराम सुरेका का लेख उत्साहप्रद उद्बोधन है। सम्मेलन एवं प्रान्तीय सम्मेलनों की गतिविधियों का सचित्र सांगोपांग विवरण के साथ यह अंक मारवाड़ी कार्यकर्त्ताओं, युवकों के लिए ही नहीं अपितु नौ करोड़ समस्त मारवाड़ियों के लिए बहुत ही उपयोगी, महत्वपूर्ण एवं समाज को जोड़ने वाला अंक है। ऐसे सुन्दर सार्थक एवं प्रेरक अंक के लिए संपादक महोदय को बहुत-बहुत बधाई।

-बैजनाथ पँवार, चुरू, राजस्थान

विगत कई दशकों से आप समाज-सेवा में लगे हुए हैं एवं आपसे हमारे जैसे लोगों को प्रेरणा मिलती रही है। आप अपने जीवन-काल में कई कीर्तिमान स्थापित कर चुके हैं एवं ईश्वर से प्रार्थना है कि आप दीर्घायु हों तथा देश एवं समाज की सेवा करते रहें।

'समाज विकास' के मार्च अंक में आपका लेख काफी सामयिक था एवं झकझोरने वाला था। मारवाड़ी समाज अभी सही मायने में संक्रमणकाल से गुजर रहा है। दिखावा, फिजूलखर्ची, आडम्बर, परिवारों का विघटन, तलाक, मांसाहार की प्रवृत्ति एवं कई बुराइयों ने मारवाड़ी समाज को अन्य समाज की नजरों में गिराया है। हमारे पूर्वजों की कमाई हुई प्रसिद्धि को हम अब तक भुनाते आ रहे हैं। परन्तु यह स्थिति ज्यादा दिन रहने वाली नहीं है। समाज के युवकों एवं युवतियों को सही दिशा में ले जाना हम सबों का कर्त्तव्य है।

-विनोद कुमार अग्रवाल, राजमहल

मार्च अंक प्राप्त हुआ। समाज विकास पत्रिका की बढ़ती ख्याति एवं उसमें प्राप्त उन्नत विचार अपने आप में समाज को धरोहर के रूप में प्राप्त हो रहे हैं।

स्व. विजय सिंह नाहर द्वारा लिखा लेख में आज के समाज का सही चित्रण दर्शाया गया है। युवा पीढ़ी ही विचार क्रांति को जीवन क्रांति में बदलेगी।

-सत्यनारायण तुलस्यान मुजफ्फरपुर, बिहार

विचार वीतिका — धर्म बनाम दैनिक जीवन

और एक बूढ़े पुजारी ने कहा : हमसे धर्म के संबंध में कुछ कहो। और उसने कहा- क्या मैंने आज तक किसी अन्य के संबंध में कहा है?

क्या सकल कर्म और चिंतन और वह जो न कर्म है न चिंतन, बल्कि हृदय में सदैव- उस समय भी जिस समय हाथ पत्थर गढ़ रहे हों या करघा चला रहे हों- प्रफुल्लित होने वाला आश्चर्य और चमत्कार धर्म नहीं है?

कौन अपने धर्म को कर्म से और विश्वास को व्यवसाय से अलग कर सकता है? कौन अपने क्षणों को अपने सामने यह कहते हुए फैला सकता है- "यह परमात्मा के लिए और यह मेरी काया के लिए।"

तुम्हारे सारे क्षण स्वरूप से स्व-रूप तक आकाश में उड़ने वाले पंख हैं। जो नैतिकता को अपना श्रेष्ठतम वस्त्र मानकर शरीर पर धारण करता है, वह ढक जाता है- पवन और धूप उसके शरीर में प्रवेश नहीं करेंगे।

जो अपनी व्यवहार की नीतिशास्त्र से व्याख्या करता है, वह अपने गानेवाले पक्षी को पिंजरे में बन्दी करता है, स्वतंत्र संगीत सीखचों और बंधनों में से नहीं आता।

जो पूजा को एक खोली जानेवाली और फिर बंद भी की जानेवाली खिड़की मानता है, वह अभी अपनी आत्मा के भवन में गया ही नहीं है, जिसकी खिड़कियां ऊषा से ऊषा (आठों पहर) तक हैं।

तुम्हारा दैनिक जीवन, तुम्हारा मंदिर और तुम्हारा धर्म है।

जब-जब तुम प्रवेश करो, अपना सब कुछ साथ ले जाओ- ले जाओ हल और कुदाली, हथौड़ा और बांसुरी-

वे सब चीजें जिनके निर्माण तुमने अपना आवश्यकता या प्रसन्नता के लिए किया है।

क्योंकि ध्यानावस्थित स्थिति में तुम अपनी सफलताओं से ऊपर नहीं उठ सकते, न विफलताओं से नीचे गिर सकते हो।

और अपने साथ सब आदमियों को ले जाओ।

क्योंकि, पूजा में तुम उन लोगों की आशाओं से ऊपर नहीं उठ सकते, न उनकी निराशाओं से अधिक दीन हो सकते हो।

और अगर तुम ईश्वर को जानना चाहते हो, तो पहेलियां (ऊंचे स्तर) हल करने वाले मत बनो। बल्कि अपने चारों ओर निगाह डालो, तुम उसे अपने बच्चों के साथ खेलते पाओगे।

और आकाश पर निगाह डालो, तुम उसे बादलों में विचरते, बिजली में बांहें फैलाते और वर्षा की धार में उतरते पाओगे।

तुम उसे फूलों में मुस्कुराते और ऊपर उठते और वृक्षों में अपने हाथों को हिलाते देखोगे।

-खलील जिब्रान

('द प्रोफेट' का अनुवाद 'जीवन संदेश' से)

सम्पादकीय

सामूहिक जीवन, सद्भाव व चिन्तन

नन्द किशोर जालान

"परस्परं भावयन्त: श्रेय: परमवाप्स्यथ:।"

पारस्परिक सद्भाव और पारस्परिक सहयोग वह मूल मंत्र है, जिससे हर प्रकार की विभूति प्राप्त हो सकती है। सामाजिक समन्वय की दृष्टि, सामाजिक समूह की क्रिया-प्रक्रिया यदि किसी विशेष लक्ष्य की ओर केन्द्रित होती है, तो वह लक्ष्य पूर्ति सहज हो जाती है, अन्यथा वह दूभर ही रहती है।

यदि कोई कहे कि व्यक्ति का जीवन समाज से अलग-थलग है, तो वह उक्ति अधिकतर अर्थहीन होगी। समाज से अलग जीवन कोई जीवन हो ही नहीं सकता। अपने जन्म दिन से अपने मरण दिन तक व्यक्ति के जीवन के हर कण में समाज की गतिविधि, समाज का दर्शन समाया रहता है। फर्क केवल एक हो सकता है- सामाजिक नियम कायदों के परिवर्तन और व्यक्ति, समाज, देश की प्रगति के कारण समाज के दर्शन में बदलाव आता है, उसका अलग अलग व्यक्तियों के जीवन में विभिन्न अंशों में प्रभाव।

इस विभिन्न अंशों में प्रभाव का अन्तर मिटाने का अनिवार्य व अचूक उपाय है सामूहिक जीवन और समूह में विचार-विमर्श का पथ। यही पारस्परिक सद्भाव और पारस्परिक सहयोग का मूल मंत्र कारगर होने लगता है। जब अनीति और उत्पीड़न समाज में अपनी धुरी जमा लेते हैं, तब ध्रुव सत्य की तरह ही पहले एक और पीछे अनेक चिन्तक उन दुरुपयोगी व अमानवीय प्रथाओं के विरोधियों के रूप में उभर कर सामने आते हैं। उनके चिन्तन का धरातल गोष्ठियों की चर्चा का विषय बन जाता है। उस चिन्तन के पीछे जो सत्यता व सामाजिक न्याय की मांग रहती है, वह एक दूसरे के सद्भाव व सहयोग द्वारा अपने समर्थकों की संख्या बढ़ाता रहता है। फिर वह चिन्तन विभिन्न जगहों में सामाजिक समूहों के सामने उपस्थित किया जाने लगता है। विरोध और समर्थन की आँधी के बीच से होता हुआ वह चिन्तन आगे बढ़ता रहता है और धीरे-धीरे समाज के मानस पर छा जाता है याने समाज उसे स्वीकारता है। दूसरे शब्दों में समाज की सामूहिक साधना का फल एक दूसरे के पारस्परिक सदभाव व पारस्परिक सहयोग की सीढ़ियों के जरिये प्रस्फुटित होता है और सामाजिक परिवर्तन के चक्र की रफ्तार तेज करता है।

अलग अलग व्यक्तियों में पृथक पृथक गुण होते हैं। अपना गुण यदि व्यक्ति अपने तक ही सीमित रखे, तो वह सामाजिक अन्याय का भागी होता है। अपने गुणों को सामाजिक धरातल देना, समुदाय के लिये व्यापक व सुलभ करना, यह अपने कर्तव्य की पूर्ति की ओर बढ़ते रहना है। जो अपने गुण को व्यापकता नहीं देना चाहते, उनके पीछे दो ही तथ्य हो सकते हैं- (१) वास्तव में वर्णित गुण से विहीन होना। (२) उसके आवरण को अपने लिये भोग्य बना लेना। झूठ सच के आवरण में छिपाकर अपने तथाकथित गुण को व्यापकता नहीं देने वाले स्वयं अपने मन में जानते हैं कि वह गुण ताकत विहीन है। यदि वह गुण है, तो उसका प्रचार प्रसार करने में, उसे समाज के समूह में व्याप्त करने में कहीं कोई बाधा नहीं होती है और वह गुण समाज, देश व काल पर अपनी छाप लगाता है और चिर स्मरणीय बन जाता है।

हमारे देश में हुए उन व्यक्तियों की बात अलग है, जो निजी सत और पौरूष में अद्वितीय हुए हैं। उन पर हमें गर्व हो सकता है, हम उनके सामने नतमस्तक हैं। लेकिन उनमें से जिन्होंने अपने अपने सत और पौरूष के गुण को सर्व-व्यापकता न दी, उनका वह गुण समाज व देश के धरातल पर न उतर सका। फल वही हुआ जो ऐसी स्थिति में होता है- वह तथाकथित सत और पौरूष उनके साथ चला गया और समाज व देश में उसके बराबर सत और पौरूष वाले न बने। समाज व देश को बदलने, समाज को शक्ति प्रदान करने, समाज के बौद्धिक, आर्थिक, सामुदायिक विकास के पथ को सुगम करने वाले वे ही रहे हैं जिन्होंने अपने चिन्तन को, अपने गुण को व्यापकता दी है और अपने चिन्तन व गुण को समूहों के बीच फेंक कर सारे समूह को उनसे लाभान्वित होने का आहवान किया है। जिन व्यक्तियों ने अपने सद्गुण जितनी मात्रा में समाज को समर्पित किये हैं, उन्होंने अपना जीवन उतनी ही मात्रा में सही अर्थों में जिया है।

महात्मा गाँधी केवल इस शती के ही नहीं, पिछली अनेक शतियों में उस विलक्षण गुण से सम्पन्न व्यक्ति हुए हैं, जिस गुण को "अहिंसा" की संज्ञा दी जाती है। मेरा दृढ़ मत है कि भविष्य का भारतीय इतिहास उन्हें इस देश में हुए अवतारों की कड़ी में जोड़ेगा और 'गाँधी अवतार' का अपना अलग प्राक्कथन बनेगा। लेकिन गाँधी के इस विलक्षण गुण की कीमत उनके घर की चहार दीवारियों में घिरे रहने के कारण नहीं, बल्कि उसे व्यक्तियों के, समाज के, देश के, जनजन के जीवन में पिरो देने के कारण बनी। ऐसी कोई सभा, ऐसा कोई समाज, ऐसा कोई व्यक्ति चाहे वह विदेशी ही क्यों न हो जो उनके सम्पर्क में आया, उनके उन विलक्षण गुणों के चिन्तन को अपने साथ लाया और साथ साथ सीख कर आया- पारस्परिक सदभावना पारस्परिक सहयोग का मूल मंत्र भी। उनके गुण की, उनके चिन्तन की प्रक्रिया इतनी तेज रफ्तर से सार्वजनिक व सामूहिक होती गई कि केवल गाँधी ही नहीं, लाखों व्यक्ति अपनी खुली छातियों पर गोलियों की वर्षात सहने को तैयार हो गये। देश में फैले सैकड़ों हजारों सम्प्रदाय सैकड़ों वर्षों से जकड़े सामाजिक पाखण्डों, धोखा-धड़ी की जंजीरों से भी अपने को मुक्त करने में समर्थ हो गये। सच पूछा जाय तो गांधी के सामूहिक चिन्तन की ज्वालाएं केवल देश की सीमाओं में ही बंध कर न रही, बल्कि चारों ओर उनका चिन्तन ज्वालाओं की तरह फैलकर विदेशियों द्वारा पददलित अनेक देशों और समाजों को नई आशाओं, नई आकांक्षाओं, नई स्वतंत्रताओं का जनक बना।

राणा प्रताप केवल हल्दीघाटी की लड़ाई के लिए नहीं जिसके बाद उन्होंने बिस्तर पर सोना तक छोड़ दिया था, भामाशाह केवल अपने वैभव के लिए नहीं, शिवाजी केवल कुछ दुर्गों के अधिपति के रूप में नहीं बल्कि अपना सब कुछ त्याग कर स्वतंत्रता की ज्योति प्रज्वलित रखने के लिये स्मरणीय हैं। आयुर्वेदाचार्य चरक अपनी ईजाद की हुई दवाइयों को आयु के उस वेद के अतुल भण्डार को जन सुलभ करने के लिये स्मरणीय है। उदाहरणों का अन्त नहीं, प्रश्न है हमारी एकांगी वृत्ति के अन्त का।

आइये हम सब मिलकर अपने अपने गुणों को पारस्परिक सदभावना व पारस्परिक सहयोग के थाल में परोस कर सामूहिक व सामाजिक जीवन को ससम्मान समर्पित करें।

50-60 YEARS OF EXCELLENCE IN QUALITY PRODUCTS

PRABHAT MARKETING CO. LTD.

4, Synagogue Street
2nd Floor, Room No. 201
Kolkata - 700001

Ph. : 033-2242-2585/4654 55252587
E-mail rohitashwaj@hotmail.com
Website : www.jalangroup.net

AUTHORISED DISTRIBUTORS OF

FINOLEX INDUSTRIES LTD.

FOR

Sanitation & Plumbing Systems
Agricultural PIPES & FITTINGS

D-1/10, MIDC. CHINCHWAD
PUNE - 411019
www.finolex.com

अध्यक्ष की कलम से

समाज में संवेदनहीनता की प्रवृत्ति पर चिन्तन करें

मोहनलाल तुलस्यान

किसी भी समाज की परिचिति साहित्य और संस्कृति में उसके अवदानों के लिए होती है। कवि मैथिलीशरण गुप्त ने इसी भावना को व्यक्त करते हुए लिखा था-

अंधकार है वहां जहां आदित्य नहीं है
मुर्दा है वह देश जहां साहित्य नहीं है॥

साहित्य की रचना मनुष्य की संवेदनात्मक अनुभूति से होती है। बिना संवेदना के मनुष्य पशु की तरह होता है। यह संवेदना ही है जो एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से जोड़ता है, एक-दूसरे के सुख-दु:ख में भाग लेने को प्रेरित करता है तथा सामाजिक संरचना में संघबद्ध होकर रहने की मानसिकता का बिकास करता है।

रत्नाकर डाकू से बाल्मीकि बनने की कहानी हम सभी जानते हैं और यह भी जानते हैं कि जब एक दिन उन्होंने एक बहेलिये के हाथों क्रौंच पक्षी का बध होते देखा तो उनकी संवेदना जागृत हुई एवं उनके मुख से अनायास ही काव्य की सृष्टि हुई। वह दुनिया की पहली काव्यात्मक अनुभूति थी।

कालांतर में इसी अनुभूति ने समाज, साहित्य और संस्कृति सबको प्रभावित किया और एक ऐसी व्यवस्था दी कि हम सभ्य समाज के रूप में परिणत हुए।

हमारे यहां यह अनुभूति इतनी तीव्र रही कि जीवन के हर अवसर को हमने काव्यात्मक बना लिया और संभवत: सर्वाधिक संवेदनशील समाजों की श्रेणी में अग्रणी रहे।

सदियों से हमारे देश और समाज में साहित्य का सृजन हो रहा है और हमारे पास उत्कृष्ट साहित्य का अथाह भंडार है। वेद, पुराण, उपनिषद्, रामायण, महाभारत से लेकर आधुनिक काल के ग्रंथों तक का यह सफर निश्चित ही एक ऐसे समाज की जीवंतता का प्रमाण है जिसमें संवेदनात्मक अनुभूति परंपरागत रूप से बनी रही।

यह बात निर्विवाद रूप से सत्य है कि-

साहित्य बड़ा तब होता है
जब समाज बड़ा होता है
देश बड़ा होता है
देश का इतिहास बड़ा होता है
छोटे में इन्सान बड़ा होता है।

यानि सबसे अधिक महत्वपूर्ण इन्सान का बड़ा होना है। वह बड़ा होगा तो समाज, देश, देश का इतिहास, साहित्य, संस्कृति सबमें उस बड़ाई का प्रभाव परिलक्षित होगा। इस रूप में हम यह कह सकते हैं कि हमारे यहां अच्छे व बड़े इन्सानों की एक समृद्ध परम्परा रही है जिनके चलते भारतीय वाङमय का इतना विकास संभव हुआ।

हम मारवाड़ियों ने इन्सानियत का यह गुण विरासत में पाया है। हमारी उत्पत्ति एक ऐसे भू-भाग में हुई जो प्राकृतिक रूप में जीवन जीने की दृष्टि से कष्टपूर्ण था जिसके चलते हममें जीवटता का भाव बहुत अधिक रहा तो दूसरी ओर हम अन्य लोगों के प्रति संवेदनशील भी रहे। यही संवेदनशीलता हमें सामाजिक-धार्मिक-आध्यात्मिक यहां तक कि आर्थिक क्षेत्र में भी प्रगति को प्रेरित करती रही। जब जहां जैसी जरूरत पड़ी हमने अपने आपको वहां उसी तरह झोंक दिया।

भारतीय इतिहस का गौरवपूर्ण अध्याय हमारे अवदानों से निर्मित रहा है। अगर स्वांतत्रोत्तर भरत की प्रगति से हमारे अवदान को निकाल दिया जाए तो प्रगति अधूरी रह जाएगी, उसी तरह स्वतंत्रता-पूर्व भारत के इतिहास से हमें अलग कर देने से भी इतिहास पूर्ण नहीं रह जाएगा।

इतनी महत्वपूर्ण भूमिका में रहने के बाद यह अपेक्षा हमसे की जानी चाहिए और जो प्रत्याशित है कि हम वर्तमान में भी एक ऐसी शक्ति, एक ऐसा समाज बनकर उभरें जो औरों के लिए अनुकरणीय हो। लेकिन यहां संशय की एक दीवार उठती दिखाई देती है।

भारतीय समाज-साहित्य-संस्कृति को तन-मन-धन से उन्नति पथ पर ले जाने वाले हम आज अपने द्वारा निर्मित कुछ अवरोधों के चलते पतनोन्मुख हो रहे हैं। 'सादा जीवन उच्च विचार' की हमारी सारस्वत अवधारणा विलुप्त होती जा रही है और हम अपनी अच्छाइयों से मुंह मोड़कर बुराई के शिकार बनते जा रहे हैं। साहित्य-संस्कृति से हमारा सरोकार घटता जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप संवेदनहीनता का जन्म हो रहा है। जिस संवेदनशीलता के वशीभूत होकर हमने एक समय 'बसुधैव कुटुम्बकम' को अपना चरम लक्ष्य माना था आज उसी से अलग हटकर हम अपने कुटुम्ब को भी अपना मानने से इनकार करते हैं। यह चिन्ताजनक स्थिति है जिस पर चिन्तन करना वक्त की जरूरत है। आज यह सोचने की जरूरत है कि मारवाड़ी समाज में साहित्य और संस्कृति को लेकर उदासीनता का भाव क्यों है और जिस ओर समाज जा रहा है क्या इसकी अपनी पहचान कायम रह पाएगी?

बदलते समाज के साथ

मारवाड़ी सम्मेलन को भी बदलना होगा

सीताराम शर्मा, *राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन*

किसी भी ७० वर्षीय संस्था के लिये सबसे महत्वपूर्ण एवं आवश्यक प्रश्न होता है अपनी प्रासंगिकता को बनाये रखना। प्रकृति का नियम है परिवर्तन। समय के साथ परिवर्तन अवश्यम्भावी है। जो व्यक्ति, संस्था, समाज या देश समय के साथ नहीं चलता वह न सिर्फ पिछड़ जाता है बल्कि अपनी प्रासंगिकता एवं उपयोगिता खो देता है।

मारवाड़ी सम्मेलन के लिये अपने को समय के साथ ढालना सबसे सहज था क्योंकि सम्मेलन की स्थापना के पीछे मूल भावना ही थी समाज को समयानुसार परिवर्तन की ओर अग्रसर करना। सम्मेलन स्वयं बदलव का स्रोत एवं प्रेरक रहा है। केवल प्रश्न उठता है बदलाव की दिशा एवं रफ्तार का। क्या हम समाज के सही दिशा में परिवर्तन के लिये प्रेरित कर पा रहे हैं? इस तेजी से बदलते समाज की दिशा एवं दशा को कौन संचालित एवं निर्धारित कर रहा है या सम्मेलन शुभ बदलावों का प्रेरक है तथा उन्हें प्रोत्साहित कर पा रहा है? क्या सम्मेलन नयी उभरती अशुभ प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने में सक्षम है?

पिछले सात दशकों में समाज में शुभ अशुभ बहुत कुछ बदला है- यह निर्विवाद सत्य है। मारवाड़ी समाज का विशेषकर कस्बों एवं शहरों में एक नया परिवर्तित रूप उभरा है। गांवों में अभी भी बहुत कुछ पुराना है। मारवाड़ी सम्मेलन के अथक प्रयास के बावजूद पर्दा प्रथा, बालिका शिक्षा, विधवा विवाह, मृतक भोज आदि सामाजिक मुद्दों पर आंशिक सफलता केवल शहरों ने प्राप्त की है। गांवों में स्थिति में अधिक सुधार नहीं हुआ है।

१९३५ में स्थापित मारवाड़ी सम्मेलन की २००६ में प्रासंगिकता एवं उपयोगिता पर यदा-कदा प्रश्न उठते रहे हैं। २१वीं शताब्दी में पर्दा-प्रथा, विधवा-विवाह, दहेज-दिखावा, बालिका शिक्षा आदि समाज सुधार की बातें कुछ लोगों को अजीबो-गरीब एवं दकियानुसी लगती है। युवा वर्ग ही नहीं समाज के अन्य अंग भी अपने आपको सम्मेलन से मानसिक रूप से पूर्णतया जोड़ नहीं पा रहे हैं। समाज सुधार एवं सम्मेलन के अन्य कार्यक्रम युवा वर्ग को पूर्ण रूप से आकर्षित नहीं कर पा रहे हैं। सेवा कार्य के लिए युवा वर्ग को लायन्स क्लब या रोटरी अधिक लुभाता है।

देश की आबादी का तीस प्रतिशत से अधिक हिस्सा युवा है। यह बात मारवाड़ी समाज पर भी लागू होती है। इसलिए युवा वर्ग को सम्मेलन से जोड़ना अनिवार्य है। मारवाड़ी युवा मंच एवं मारवाड़ी महिला सम्मेलन राष्ट्रीय सम्मेलन के एक अभिन्न अंग के रूप में युवा एवं महिलाओं के बीच महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। तीनों के बीच और अधिक सामंजस्य एवं तालमेल की नितान्त जरूरत है। युवा एवं महिलाओं की भागीदारी एवं समर्थन के बिना कोई भी समाज-सुधार का आन्दोलन निरर्थक साबित होगा क्योंकि समाज-सुधार के प्राय: सभी कार्यक्रम समाज के इन्हीं वर्गों को सम्बोधित करते हैं अतएव सम्मेलन को बदलते समाज के साथ युवा एवं महिला वर्ग के सम्मुख नये आर्थिक एवं सामाजिक प्रश्नों के साथ अपने को जोड़कर नये कार्यक्रम हाथ में लेने होंगे जो इस वर्ग को आरोपित करते हों।

शहरी शिक्षित युवा-युवतियों की प्राथमिकताएं बदल रही हैं। युवतियां पर्दा-प्रथा, शिक्षा एवं सास-बहू के प्रश्नों से कहीं आगे निकलकर आर्थिक स्वावलम्बन एवं अन्तर्जातीय विवाह जैसे आर्थिक एवं सामाजिक प्रश्नों पर बातचीत करना चाहती है। वहीं युवक एक तरफ नयी आर्थिक चुनौतियों में नई संभावनाएं खोज रहा है तो दूसरी ओर अपनी सामाजिक मान्यताओं-परम्पराओं तथा आधुनिक जीवन शैली के बीच सामंजस्यता के रास्ते खोज रहा है। वह अपनी पहचान बनाये रखना चाहता है लेकिन अलग-थलग नहीं पड़ना चाहता। युवा पीढ़ी एवं बुजुर्गों के बीच संवाद प्राय: नहीं के बराबर रह गया है। सोच की खाई चौड़ी होती जा रही है- इसे सम्मेलन को पाटना होगा।

देश एवं विश्व में एक बड़ा परिवर्तन घट रहा है। खुली अर्थव्यवस्था एवं बाजार व्यवस्था ने एक ओर जहां कठिन एवं तीव्र प्रतिस्पर्द्धा को खड़ा कर दिया है वहीं नये अवसरों का खजाना खुल गया है। इसी व्यवस्था के चलते न सिर्फ सामाजिक जीवन में बल्कि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में भी अर्थ का बोलबाला बढ़ गया है। धनोपार्जन को अब एक नये सम्मान का स्थान मिला है। अर्थ के बढ़ते महत्व ने नयी गंभीर सामाजिक समस्याओं को खड़ा किया है, इनका सामना करना होगा।

समाज तेजी से बदल रहा है। सम्मेलन को भी साथ-साथ तेजी से बदलना होगा- नये उद्देश्यों के साथ नये कार्यक्रमों के साथ। तभी हम समाज के हर वर्ग को अपने साथ सक्रिय रूप से जोड़ सकेंगे। सम्मेलन की समाज को आवश्यकता ६० वर्ष पूर्व थी, आज भी है एवं आगे भी रहेगी क्योंकि समाज सुधार एक निरन्तर प्रक्रिया है। सम्मेलन का कोई विकल्प नहीं है।

जाने कहाँ गये वो दिन...

भानीराम सुरेका, राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

समय के साथ किसी समाज की रीति-नीति, आचार-व्यवहार, साहित्यिक-सांस्कृतिक-सामाजिक चिंतन की धारा में बदलाव का आना लाजिमी है लेकिन यह बदलाव अगर सकारात्मक न होकर नकारात्मक हो तो इसका खामियाजा पूरे समाज को भुगतना पड़ता है। कई बार तो नकारात्मकता की यह स्थिति समाज की छवि को इस कदर धुंधला कर देती है कि वास्तविकता का पता लगाना मुश्किल होता है।

मारवाड़ी समाज के संदर्भ में सोचते हुए बार-बार मेरे दिलोदिमाग में यह भावना आती है कि जिस तरह समाज में तीव्रता से परिवर्तन की लहर है उसमें अगर अच्छाई और बुराई का ख्याल नहीं किया गया तो आनेवाले दिनों में समाज की दिशा और दशा क्या होगी? क्या यह समाज अपनी पृथक पहचान बनाये रखने में कामयाब हो सकेगा या कि अन्य बहुत से समाजों की तरह इसकी पहचान भी एक ऐसे समाज के रूप में होगी जो अपने अतीत के व्यामोह में वर्तमान को भूल गया और भविष्य को अंधकाराच्छादित कर लिया?

मुझे ताज्जुब होता है जब अपने सामाजिक जीवन के अनुभवों को लेकर कभी चिंतन करता हूं। मात्र पच्चीस-तीस साल में समाज में जो संस्कारगत अवनति हुई है वह दिल को दहला देने वाली है। मेरे जीवन के दो प्रसंगों से मैं इस परिवर्तन का रूपक प्रस्तुत करना चाहूंगा।

प्रसंग-१

वर्ष १९७९ की बात है जब मैं नया-नया मारवाड़ी सम्मेलन के अधिवेशन में साथियों के साथ बंबई गया था। स्व. मेजर रामप्रसादजी पोद्दार अध्यक्ष व स्व. बजरंगलाल जी जाजू महामंत्री बने थे। परस्पर आत्मीयता, सांगठनिक क्षमता और समाज के लिए कुछ करने का जज्बा लिए लोगों की उस भीड़ ने मुझे पहली बार आकर्षित किया। मेरे मन में भी समाज के लिए कुछ करने का विचार उपजा।

सन् १९८२-८३ में मैं फिर बंबई गया और श्री रामप्रसाद पोद्दार से उनके वर्ली स्थित सेंचुरी बिड़ला के दफ्तर में मिला तो अत्यधिक व्यस्तता के बीच भी उन्होंने सम्मेलन को लेकर काफी बातें की और कुछ करने की दृढ़ता भी दिखाई। मैं तब कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन का अध्यक्ष था। उनके आतिथ्य की सबसे बड़ी विशेषता मुझे तब देखने को मिली जब मुझे छोड़ने वे स्वयं लिफ्ट तक आये। इतने बड़े व्यक्तित्व का एक अदना व्यक्ति के प्रति यह सम्मान वाकई जीवन का सुखद क्षण था।

इसी तरह की आत्मीयता बजरंग लाल जाजू में थी चाहे वे दिल्ली के अपने निवास स्थान पर हों या कलकत्ता में उनके या मेरे निवास स्थान पर सम्मेलन को लेकर उनका उत्साह देखने लायक होता था। आज सोचता हूं कि कहां गये ऐसे लोग और उनकी सामाजिक भावना जो मुर्दे में भी जोश का संचार कर देने में सक्षम थी। महत्वपूर्ण होकर भी सामान्य जन की तरह उनका व्यवहार क्या आज किसी से अपेक्षा की जा सकती है?

प्रसंग-२

वर्ष १९८२। जमशेदपुर में सम्मेलन का अधिवेशन था। श्री नन्दकिशोर जालान अध्यक्ष चुने गये थे। उनके स्वागत में उन्हें लॉरी में खड़ा करके गलियों में घुमाया गया तो घरों के ऊपर से महिलाओं ने फूल बरसा कर उनका अभिनन्दन किया। यह दृश्य आज भी आंखों के आगे घूमता है तो रोमांच हो आता है। हजारों लोगों की भीड़ पैदल चल रही हो और सम्मेलन का मुखिया उनका नेतृत्व दे रहा हो यह विरल क्षण था। आज भी श्री जालान जी के मन में सम्मेलन के प्रति जो दर्द है वह उनके लगाव को प्रतिबिंबित करता है।

उसी अधिवेशन में श्री रतन शाह संयुक्त महामंत्री और स्व. बजरंग लाल जाजू महामंत्री बने। दोनों का ओजस्वी भाषण रिकार्ड करने लायक था। जाजू जी तो भावुकता में स्टेज पर ही रोने लगे। क्या आज कोई इस दृश्य की कल्पना कर सकता है?

उसके बाद के सभी अधिवेशनों में जाता रहा हूं- कानपुर, दिल्ली, रांची, हैदराबाद आदि आदि पर आत्मीयता और भावुकता की वह महक उस रूप में फिर नहीं मिली। सभी प्रांतों का भ्रमण किया है और पाया कि महानगरों की वनिस्पत कस्बों में यह भाव आज भी कुछ हद तक शेष है।

पता नहीं कैसे समाज में आत्मीयता और भावुकता की जगह ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थपरकता, अहं, लापरवाही और एक-दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति का उदय हुआ जो धीरे-धीरे सामाजिकता की भावना को ही खा गया।

एक समय सामाजिक क्षेत्र में मुझे स्व. रघुनाथ प्रसाद खेतान, स्व. बजरंग लाल लाठ, स्व. सुशीला भंवरमल सिंघी, स्व. कृष्णचन्द्र अग्रवाल, श्री किशोरीलाल ढांढनिया, स्व. श्री हरिशंकर सिंघानिया, श्री राजेश खेतान, श्री सत्यनारायण बजाज, श्री गीतेश शर्मा, श्री सीताराम शर्मा आदि के साथ काम करने का मार्गदर्शन मिला, सबकी सलाह से काम किया पर आने वाले दिनों में कौन साथ देगा यह कल्पना करते ही दिल बैठ जाता है।

विशेष साक्षात्कार

बंगाल के विकास में हिन्दी भाषियों की अहम् भूमिका है : बुद्धदेव

कला, संगीत, संस्कृति, शालीनता, शिष्टता और समृद्ध सभ्यता के लिए सदा से अपनी एक अलग पहचान रखने वाला पश्चिम बंगाल कई कारणों से उद्योग व्यापार के मोर्चे पर पिछड़ने लगा था। काफी आलोचना हो रही थी। अब मन-मिजाज से कवि, साहित्यकार और संगीत प्रेमी बुद्धदेव भट्टाचार्य के नेतृत्व में बंगाल एक बार फिर तरक्की की राह पर सरपट दौड़ लगा रहा है। देश विदेश के उद्यमी और निवेशक यहां ताजा निवेश कर रहे हैं। उद्योग व्यापार से जुड़े लोगों में विश्वास पैदा हुआ है और ऐसी उम्मीद जगी है कि बंगाल फिर से अपने पुराने गौरव को हासिल करने की ओर तेज रफ्तार से आगे बढ़ रहा है।

प्रस्तुत है विश्वमित्र के प्रधान सम्पादक प्रकाशचन्द्र अग्रवाल का अपने संवाददाता प्रदीप शुक्ला व छायाकार अशोक बोस के साथ राज्य से जुड़ी विभिन्न ज्वलन्त समस्याओं पर मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य से विशेष बातचीत के मुख्य अंश :-

सवाल : आपको आज की राजनीति कैसी लगती है तथा पहले की राजनीति में और आज की राजनीति में किस तरह का बुनियादी फर्क दिख रहा है?

जवाब : राजनीति में बहुत बड़ा फर्क आ गया है। त्याग, बलिदान, आदर्श और सिद्धान्तों की राजनीति खत्म होती दिख रही है। धनबल और बाहुबल राजनीति में हावी होता जा रहा है। लोकतंत्र के लिए अच्छा संकेत नहीं है। अच्छे लोग राजनीति से अपने को अलग रखना चाहते हैं। खासकर युवा पीढ़ी तो राजनीति में आना ही नहीं चाहती है। राजनीति को निश्चित रूप से इस स्थिति से उबरना होगा, अन्यथा लोकतंत्र खतरे में पड़ जाएगा।

सवाल : तो क्या आप मानते हैं कि राजनीति की यही स्थिति आपकी पार्टी में भी है?

जवाब : मैं इस बात से बिल्कुल इनकार नहीं करता हूं। राजनीति के बदले हुए चरित्र का कुछ असर माकपा पर भी पड़ा है। नैतिकता की गिरावट से मेरी पार्टी भी अछूती नहीं है। जब भी पार्टी में किसी असामाजिक तत्व के प्रवेश की बात सामने आती है तो उस पर सख्त कदम उठाया जाता है। हाँ, एक बात मैं जरूर मजबूती के साथ कहूंगा कि मेरी पार्टी में एक सिस्टम है और वह सिस्टम है इस तरह की विसंगतियों से सावधान रहने का। जब भी जहां भी किसी भी तरह की शिकायत या गड़बड़ी दिखती है तो हमारी पार्टी कड़ा कदम उठाने से बिल्कुल परहेज नहीं करती है।

सवाल : आप पर समूचे राज्य का भार है। राजनीतिक व्यस्तताएं रहती है। इसके बावजूद आप कला, साहित्य और संगीत के लिए कैसे समय निकाल लेते हैं?

जवाब : मुस्कराए, काफी खुश हुए और फिर बोले कि देखिए साहित्य मेरा पहला प्यार है संगीत, साहित्य और कला चूंकि मेरा शौक है और आनंद की अनुभूति करने का एक सशक्त माध्यम भी। मैं राजनीति से कम ध्यान नहीं देता हूं साहित्य व संगीत पर। सारे दिन के कामकाज और भागदौड़ के बाद जब मैं घर जाकर साहित्य पढ़ता हू तो मेरी थकान दूर होती है। दिल दिमाग बिल्कुल ताजा हो जाता है।

सवाल : २९ वर्षों से पश्चिम बंगाल में वाममोर्चा का शासन है। क्या वजह है कि वाममोर्चा के मंत्रिमंडल में किसी हिन्दी भाषी नेता को स्थान नहीं मिला, जबकि पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार में हिन्दी भाषी नेताओं ने मंत्रिमंडल में प्रतिनिधित्व किया है?

जवाब : इसके पीछे कोई खास कारण नहीं है। मोहम्मद अमीन और मोहम्मद सलीम जैसे नेता हैं जो हिन्दी-उर्दू भाषियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वाममोर्चा के मंत्रिमंडल में किसी को स्थान जाति, धर्म या भाषा के आधार पर नहीं बल्कि व्यक्तिगत कर्यक्षमता और प्रदर्शन के आधार पर मिलता है।

सवाल : पश्चिम बंगाल में हिन्दी भाषा-भाषियों की अच्छी तादाद है, आप हिन्दी भाषी समुदाय को किस नजरिए से देखते हैं?

जवाब : मुझे अपने राज्य के हिन्दी भाषी समुदाय पर गर्व है। हिन्दी भाषियों की राज्य के आर्थिक व सामाजिक विकास में बहुत बड़ी भूमिका है। मुझे गर्व इस बात पर भी है कि हमारे राज्य में सभी धर्म समुदाय व भाषा के लोग मिलजुल कर रहते हैं। साम्प्रदायिक सद्भाव की दृष्टि से हमारा राज्य अव्वल स्थान पर है। कोलकाता महानगर तो मिनी इंडिया है।

सवाल : आपने भी स्वीकार किया है कि राज्य में शिक्षा तथा स्वास्थ्य के क्षेत्र में विकास की काफी गुंजाइश है। इस बावत आपकी क्या योजना है?

जवाब : हां, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है। हमारे यहां की विश्वविद्यालयीन शिक्षा का स्तर पहले से ही काफी उन्नत है। प्रेसीडेंसी कालेज और सेंट जेवियर्स कालेज को स्वायत्तता प्रदान कर रहे हैं। प्राथमिक स्तर पर शिक्षा सुविधाएं विकसित करने का काम जारी है। हमारा लक्ष्य है कि राज्य के शत-प्रतिशत बच्चे स्कूल जाएं और समय की जरूरत के मुताबिक शिक्षा ग्रहण करें। राज्य में ६८,००० प्राथमिक विद्यालय है, जबकि और विद्यालय खोलने की योजना है। सर्वशिक्षा अभियान को मजबूती के साथ चलाया जा रहा है। प्राथमिक स्तर से अंग्रेजी पढ़ाने की पुरजोर कोशिशें जारी है। हम

क्वालिटी ऑफ टीचिंग में सुधार लाने का प्रयास कर रहे हैं। इसी तरह स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी कोशिशें जारी है और सरकार की कोशिशों के नतीजे भी दिख रहे हैं। सरकारी अस्पतालों का आधुनिकीकरण किया जा रहा है और खासकर ग्रामीण क्षेत्रों के प्राथमिक चिकित्सालयों को उन्नत करने तथा उनमें चिकित्सकीय सुविधाएं बढ़ाने का काम जारी है।

सवाल : पश्चिम बंगाल तरक्की की राह पर चल पड़ा है। कृषि और भूमि सुधार के क्षेत्र में विकास हुआ है लेकिन साथ ही राज्य के कुछ इलाकों में भूखमरी की भी स्थिति है। अमलासोल जैसे क्षेत्र उदाहरण हैं। इस बारे में आपका क्या कहना है?

जवाब : मैं इस बात को मानता हूं कि पश्चिम बंगाल में भी गरीबी है। खासकर पुरूलिया, बांकुड़ा और पश्चिम दिनाजपुर जैसे क्षेत्र ऐसे है जहां के कुछ इलाकों में ऐसी स्थिति है। लेकिन इसके साथ ही एक बात मैं कहना चाहूंगा कि गरीबी की दर सबसे कम पश्चिम बंगाल में ही है। ५६% से गरीबी की दर घटकर २३% रह गई है। भूमि सुधार योजना में हम सफल रहे हैं। कृषि उत्पादन बढ़ा है। मैं गरीब इलाकों की खबर खुद रख रहा हूं और गरीबी खत्म करने के प्रयास जारी हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि अगले पांच सालों में कामयाबी मिल जाएगी। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह व्यक्तिगत रूप से यह मानते हैं कि पश्चिम बंगाल में ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए काफी काम हुआ है। और हो रहा है। प्रधानमंत्री का यह दावा है कि वही राजनीतिक दल राज्यों की सत्ता में दोबारा सत्तासीन हो पाएंगे जो ग्रामीण क्षेत्रों का विकास करेंगे।

सवाल : २४ वर्षों तक ज्योति बसु के नेतृत्व में राज्य में शासन चला। पांच वर्षों से आपके नेतृत्व में चल रहा है। दोनों शासनकाल में आपको क्या फर्क नजर आता है?

जवाब : अच्छा सवाल है आपका। देखिए ज्योति बसु ने अपने शासनकाल में जिन नीतियों की शुरुआत की थी उन्हीं का मैं क्रियान्वयन कर रहा हूं। कहने का मतलब यह है कि बुनियाद उन्हीं की रखी हुई है। इसलिए किसका शासन अच्छा था किसका बुरा है यह बात सोचना ही नहीं चाहिये। मेरी कोशिश है कि जल्द से जल्द हमारा राज्य औद्योगिक दृष्टि से देश के विकसित राज्यों की श्रेणी में जा पहुंचे।

सवाल : आम लोगों में एक धारणा है कि बुद्धदेव भट्टाचार्य का नजरिया विकास के अनुकूल है और अच्छा आदमी हैं तथा अच्छा काम कर रहे हैं। लेकिन अगर आपको अलग कर सरकार को देखा जाए तो...?

जवाब : देखिए हमारी सरकार की जो भी उपलब्धियां हैं उनका श्रेय हमारी टीम को है। सिर्फ बुद्धदेव भट्टाचार्य को अलग से देखना या सिर्फ हमीं को श्रेय देना उचित नहीं है। हमारे मंत्रिमंडल के युवा सदस्यों और पार्टी स्तर के युवा कार्यकर्त्ताओं की बहुत बड़ी भूमिका है।

सवाल : राज्य की कानून व्यवस्था पर सवाल खड़े हो रहे हैं और बंगाल को आतंकियों की शरणस्थली कहा जाने लगा है। आपका क्या कहना है?

जवाब : हम आतंकी तत्वों को लोगों से अलग करने में सफल हुए हैं। लेकिन यह एक सच्चाई है कि अभी भी छोटे-छोटे समूह सक्रिय हैं।

सवाल : हालांकि महानगर में कई फ्लाई ओवर बने हैं। सड़कों की हालत अच्छी हुई है लेकिन इसके बावजूद ट्राफिक सिस्टम अब तक पंगु है। इस बारे में कोई योजना है?

जवाब : हां ट्राफिक सिस्टम दुरुस्त करने के लिए अभी भी बहुत काम बाकी है। मेट्रो रेल हमारे शहर के लिए वरदान है। हमारी सरकार कुछ इसी तरह के ट्राफिक सिस्टम के विस्तार के लिए प्रयास कर रही है। जापानी कम्पनी से बातचीत चल रही है। अगर सब कुछ ठीकठाक रहा तो हम एलिवेटेड ट्रेन की व्यवस्था शुरू कर देंगे।

अभी अधूरी है आजादी

अभी अधूरी है आजादी, आया नहीं सुराज है।
मिटी गरीबी नहीं अभी तक, बदला नहीं समाज है॥
भ्रष्टाचार कर रहा तांडव, जनता बनी हुई बेचारी।
नेताओं की पांचों घी में, बढ़ती ही जाती बेकारी॥
गाँव, गरीब, कृषक, अकुलाते, शोषण करता राज है।
अभी अधूरी है आजादी, आया नहीं सुराज है॥
अफसर, ठेकेदार लूटते, करते कदम-कदम मनमनी।
धनिकों के घर रोज दिवली, दिशा हीन हो रही जवानी।
संसद में होता हंगामा, तनिक न आती लाज है।
अभी अधूरी है आजादी, आया नहीं सुराज है॥

जातिवाद करता है गर्जन, मानवता आहत हो रोती।
राजनीति व्यवसाय बन गई, लुटते सदाचार के मोती॥
पदकुंठित समरसता, ममता, गिरती उन पर गाज है।
अभी अधूरी है आजादी, आया नहीं सुराज है॥
भारत है बाजारा बन गया, बंटाधार हो रहा भारी।
अस्मत लुटती है नारी की, आपा-धापी मारा-मारी॥
बाजी तिकड़म बाज मारते, व्यथित भारती आज है।
अभी अधूरी है आजादी, आया नहीं सुराज है।

-युगल किशोर चौधरी,
वनपटि

क्या आज की स्वतंत्रता नारी को उत्थान की ओर ले जा रही है?

स्व. मंजु महेरिया, पूर्व अध्यक्षा, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

आज के परिप्रेक्ष्य में, जबकि चारों ओर से नारी स्वतंत्रता की आवाजें अनवरत् सुनाई पड़ रही है, यह प्रश्न सचमुच विचारणीय है कि स्वतंत्रता के वास्तविक अर्थ आखिर क्या हैं? क्योंकि आज जिन अर्थों में स्वतंत्रता, राष्ट्र, समाज और परिवार में ग्रहण की जा रही है, वह कदापि स्वतंत्रता का स्वस्थ स्वरूप नहीं कहा जा सकता। अतः स्वतंत्रता नारी को उत्थान की ओर ले जा रही है अथवा नहीं, इस प्रश्न पर विचार करने से पहले देखना यह होगा कि स्वतंत्रता कहते किसे हैं। स्वतंत्रता के मापदंड आखिर क्या हैं? हमारे समाज के लिए तो यह प्रश्न और भी महत्वपूर्ण है, जहां शिक्षा का अभाव है, कोरे आदर्श और रूढ़िवादिता ही अधिक हैं तथा शहरों के कुछ प्रतिशत को छोड़कर महिलाओं के दृष्टिकोण बहुत ही संकुचित हैं।

गाँधीजी ने अधिकारों और कर्त्तव्यों के अन्योन्याश्रित संबंधों पर जुड़ी स्वतंत्रता के जिस स्वरूप की कामना की थी, आज निश्चय ही स्वतंत्रता उन अर्थों में प्रयुक्त नहीं हो रही है, क्योंकि आज अधिकार ही प्रमुख हो गये हैं, कर्त्तव्य गौण। हम अधिकारों के प्रति तो सतत् जागरूक हैं, किन्तु कर्त्तव्यों की बात आते ही कई किन्तु-परन्तु हमारे समक्ष आ जाते हैं, चाहे वह परिवार का क्षेत्र हो, समाज का अथवा राष्ट्र का। विघटन का यह दौर अधिकारों के इन्हीं उच्छृंखल झंझावातों की कहानी कह रहा है। स्वतंत्रता और शिक्षा का सही अर्थ है 'ऐसे सबल, सशक्त और जागरूक व्यक्तित्व का निर्माण जो देश, समाज और परिवार को सत्यम् तथा शिवम् और सुंदरम् की ओर अग्रसर करने में सहायक हो।'

हमारे वैदिक काल को नारी के सर्वाधिक महत्व, गौरव और अधिकारों की दृष्टि से स्वर्णिम काल माना गया है। वेदकारों ने नारी को समाज के सभी क्षेत्रों तथा धर्म, कला साहित्य आदि में पुरुषों के समकक्ष रखते हुए उसे अर्द्धांगिनी की संज्ञा दी। परिणाम सामने थे। इस काल के सामाजिक उत्थान में नारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। वैदिक काल में स्त्रियां- दर्शन, तर्क, मीमांसा, साहित्य, कला आदि सभी विषयों की विदूषियां हुआ करती थीं। ऋग्वेद की ऋचाओं के प्रणयम में करीबन २० कवियित्रियों का योगदान रहा। क्यों? कारण स्पष्ट हैं। नारी की श्रेष्ठता के प्रति विश्वास तथा उन्हें प्रदत्त स्वतंत्र वातावरण। उत्तर वैदिक काल में नारी को अभिबन्धित कर दयनीय, हेय, और मानसिक रूप से दुर्बल बना दिया। स्त्री के लिए प्रयुक्त "अबला" शब्द इसी काल की देन है।

१९वीं सदी में संपूर्ण विश्व ने विकास की ओर चतुर्दिक कदम बढ़ाये। न सिर्फ वैज्ञानिक स्तर पर बल्कि हमारी सोच में भी विलक्षण बदलव आया। हमारे देश में भी सुधारवादी नेताओं तथा राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर आदि के प्रयत्नों से नारियों पर से प्रतिबन्धों का शिकंजा कम होता गया। सन् १९२० से १९३० के दशक ने स्त्रियों को सम्पत्ति का अधिकार दिया तथा स्वतंत्र भारत के संबिधान ने स्त्री को पुनः पुरुष के समकक्ष लाकर खड़ा कर दिया। अब भी परिणाम सामने हैं। आज नारी प्रगति की उन ऊंचाइयों पर खड़ी है, जिसकी उसने कभी कल्पना भी न की थी। आज परिवार से लेकर, शिक्षा, राजनीति, समाज-सेवा, वायुसेना, पर्वतारोहण जैसे दुरूह क्षेत्रों में भी नारियों का वर्चस्व कायम हो चुका है। आज प्रत्येक क्षेत्र में अनेकानेक नारियों के उत्थान के हस्ताक्षर हैं। यह अभूतपूर्व प्रगति और विकास क्या स्वतंत्रता के ही कारण संभव नहीं हुआ है! यह तो एक निर्विवाद सत्य है कि जब-जब नारियों को स्वतंत्रता मिली है, उसने अभूतपूर्व प्रगति की है।

लेकिन इस तथ्य से भी इन्कर नहीं किया ज सकता कि सिक्के का दूसरा पहलू भी है। कुछ स्थितियों में स्वतंत्रता की विकृतियां भी सामने आ रही हैं, जिनका परिणाम गृह-कलह, तलाक, कन्याओं का गुमराह होना आदि के रूप में दिखाई पड़ रहा है। ऐसी स्थिति में यदि हम यह कहने लगें कि देखा अधिक स्वतंत्रता का परिणाम तो यह कदापि उचित न होगा। यह सब तो वैसी ही स्थितियों में होता है जब स्वतंत्रता का अर्थ संकुचित होकर उच्छृंखलता बन जाता है, जब कर्त्तव्य गौण हो जाते हैं और अधिकार प्रबल।

आज आवश्यकता है स्वातंत्र्य के सही अर्थ-ग्रहण की, न कि मात्र स्वतंत्रता की अनवरत् मांग की। यह अर्थ ग्रहण, मात्र नारी-समाज के लिए ही आवश्यक नहीं, वरन पुरुष वर्ग के लिए भी उतना ही आवश्यक है। पिता, पति, भाई तथा अन्य रूपों में पुरुषों का स्त्रियों के साथ यथोचित व्यवहार स्वतंत्रता के सही मानदंडों के अर्थ प्रदान करता है। किसी ने सच ही कहा है स्वतंत्रता के बिना विकास कभी संभव नहीं, किन्तु सच्ची स्वतंत्रता, न कि स्वतंत्रता का छद्मवेशी जाल?

नारी

किन शब्दों में दूं परिभाषा
हर शब्द तुमसे छोटा लगता है,
सरस्वती सी ज्ञान की गंगा
लक्ष्मी का भंडार तुम्ही हो।
सुबह की बेला, दिन की धूप,
गोधूलि की शाम तुम्ही हो,
थके पथिक की अंकशायिनी
रात्रि का विश्राम तुम्ही हो।

-अनुराधा मोदी (अनु), कटक

मारवाड़ी सम्मेलन ने हमें क्या दिया?

मांगीलाल चौधरी, अध्यक्ष, राहा शाखा, असम

सवाल जो आपने किया
जवाब मुझे देना है
आपसे मैंने कुछ लिया
तो आपको भी कुछ देना है।

पिछले कुछ दिनों से कुछ सज्जनों द्वारा निरंतर यह सवाल उठाते देखा गया कि पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन ने हमें क्या दिया। दरअसल जिन लोगों ने यह सवाल उठाया है उनके प्रति मैं अपना आभार प्रकट करता हूं क्योंकि अगर वे ऐसा नहीं करते तो मुझे अपने विचार उन तक पहुंचाने का सुअवसर प्राप्त नहीं होता। अगर यही सवाल अपने आप से करते तो जवाब अपने आप मिल जाता और मुझे कहने की जरूरत ही नहीं पड़ती। खैर, प्रश्न ने मेरे दिलो-दिमाग में जो विचार उत्पन्न किये उसे मैं आप सज्जनों तक पहुंचाना चाहता हूं। अगर मेरे विचारों से आप सहमत न हों तो भी आप जैसे शुभचिंतक महानुभाव ठुकरायेंगे नहीं, यह मेरा हार्दिक विश्वास है।

भारत एक सदविचारों, सत्कर्मों का देश है जो सारे संसार को रोशनी की राह दिखाता आ रहा है। पूर्वोत्तर भारत का वह हिस्सा है, जहां राजस्थान के लोग विभिन्न इलाकों से आ बसे हैं। अपनी लगन, अविरल मेहनत, अथक परिश्रम और गतिशीलता के कारण इस इलाके में अपनी एक अलग पहचान की छाप छोड़ते हुए उन्होंने जीवन की सीढ़ी चढ़ने में सफलता की कुंजी हासिल कर ली है। आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शिक्षा के क्षेत्र में आदर्श प्रस्तुत करने में सक्षम हुए हैं। इन क्षेत्रों में उनका योगदान स्वीकार किये बिना नहीं रहा जाता। व्यवसाय-कौशल में निपुण यह समाज धन की कमाई के साथ-साथ देश हित और जन हित की पावन भावनाओं को जागृत करने में सफल रहा।

हर समाज में, हर देश में अपनी-अपनी संस्थाएं होती हैं। संस्थाओं के अपने-अपने उद्देश्य होते हैं। अपनी-अपनी नीतियां होती हैं, अपना-अपना कार्यक्षेत्र होता है, हां यह बात अलग है कि एक साथ सारे उद्देश्य, सारी नीतियां लागू कर पाते हैं या नहीं। हमें भूलना नहीं चाहिए कि कोई बच्चा एक दिन में जवान नहीं होता, उसे वक्त की जरूरत पड़ती है।

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन का जन्म, खासतौर से असम में सन् १९३५ में असम के प्रसिद्ध ऐतिहासिक शहर डिब्रूगढ़ में कलकत्ता के विशिष्ट समाज सेवक प्रभुदयाल जी हिम्मतसिंहका के सभापतित्व में हुआ। यहां यह मारवाड़ी सम्मेलन का सर्वप्रथम सम्मेलन था।

सम्मेलन का उद्देश्य था पूर्वोत्तर के मारवाड़ी समाज को एक चेतन तथा जागरुक समाज के रूप में प्रस्तुत करना तथ समाज को संजीवित करते हुए अपने कर्त्तव्यों के प्रति सचेत करना। सम्मेलन के सामने एक महान लक्ष्य था, एक अच्छा ध्येय था। लक्ष्य की प्राप्ति में कामयाबी की सीढ़ियां चढ़ने में उतार-चढ़ाव अवश्य आयेगा, समय अवश्य लगेगा।

मारवाड़ी समाज में कुछ कुरीतियां थी। उनमें एक थी सती प्रथा, दूसरी दहेज की प्रथा, तीसरी घूंघट की प्रथा, चौथी विधवा का पुनर्विवाह का न होना, नारियों को समुचित शिक्षा प्रदान न करना आदि। मारवाड़ी सम्मेलन ने हमेशा समाज की कुरीतियों के उखाड़ फेंकने क भरसक प्रयत्न किया है। काफी हद तक सफलता भी मिली है। सम्मेलन के प्रयत्न से तथा सरकार के प्रयास के कारण सती प्रथा बन्द हो गई है। सरकार ने कानून बनाया और मारवाड़ी समाज ने सम्मेलन के माध्यम से सहयोग दिया। इस मामले में समाज के हर व्यक्ति के योगदान ने एक अहम भूमिका निभाई।

हमारे समाज में दहेज की व्यवस्था थी जिसके चलते उनके परिवारों को कष्टों का सामना करना पड़ा। मारवाड़ी सम्मेलन दहेज मुक्त विवाह व्यवस्था क निर्माण करने का प्रयास हमेशा करता आ रहा है और सफलता भी मिली है। पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के प्रयास से पूर्वोत्तर मारवड़ी समाज में अनेक परिवर्तन आये हैं। नारियों में घूंघट व्यवस्था थी वह आज समाप्त हो गई। अब तो नौबत ऐसी आ गई है कि कुछ लोग चाहते हैं कि थोड़ा बहुत घूंघट होना चहिए।

हमारा समाज शिक्षा के क्षेत्र में बहुत अधिक आगे बढ़ा हुआ नहीं था भले ही वाणिज्य के क्षेत्र में प्रगति की हो। मारवाड़ी सम्मेलन का एक महान उद्देश्य था अशिक्षितों को शिक्षित बनाना, क्योंकि हर कोई जानता है कि शिक्षा में पिछड़े हुए लोग जीवन की हर दिशा में आशानुरूप प्रगति नहीं कर सकते। सम्मेलन के प्रयास के कारण आज हमारे समाज में बहुत सारे डाक्टर हैं, इंजीनियर हैं, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट हैं। हमारे समाज के कुछ लोग बड़े-बड़े पद पर आसीन हुए हैं, यह गौरव की बात है। पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन ने गुवाहाटी में छात्रावास की व्यवस्था की है ताकि उच्च शिक्षा हेतु गुवाहाटी आये हुए छात्रों को कोई तकलीफ न हो।

पूर्वोत्तर के हर नगर-शहर में सम्मेलन की मदद से हिन्दी माध्यम के विद्यालयों की स्थापना की गई है। जहां मारवाड़ी समाज के छात्र आसानी से शिक्षा प्राप्त कर सकें। तिनसुकिया, डिब्रूगढ़, जोरहाट, नौगांव, होजाई, गुवाहाटी, बंगाईगांव में ऐसे विद्यालय हैं। समज के शिक्षित बनाने में सम्मेलन ने अहम भूमिका निभाई है।

जब सम्मेलन ने देखा कि समाज के कुछ मेधावी छात्र दयनीय आर्थिक स्थिति के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ होते हैं तो मारवाड़ी सम्मेलन ने पांचवें अधिवेशन के अवसर पर सन् १९६३ में स्वर्गीय लालचन्द तोदी, विश्वनाथ केडिया, जुगलकिशोर केडिया,

बनवारीलाल जंसरारिया, गणपत राय धानुका तथा शिलंग और तिनसुकिया से आये हुए कुल सत्ताईस सज्जनों ने शिक्षा कोष का गठन किया। इस कोष से छात्र-वृत्ति प्रदान की जाती है, छात्रों को प्रोत्साहित किया जाता है। यह सम्मेलन का ही प्रोत्साह है कि आज समाज में वकील, डाक्टर, पाइलट आदि हुए हैं। प्राप्त तथ्य के अनुसार 'असम प्रादेशिक शिक्षा कोष' से सन् २००१ तक रु. ६,७५,७७५/- छात्रों में वितरित किये गये हैं।

लड़कियां पढ़ाई-लिखाई में बहुत पिछड़ी हुई थी, उनके जागरण का अभाव था। शिक्षा में उनका आग्रह बढ़ाने के उद्देश्य से सन् १९७७ में और आर्थिक दृष्टि से पिछड़ी नारियों को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाने के उद्देश्य से 'महिला कल्याण कोष' का गठन किया गया। इस महिला कोष द्वारा महिला का उपकार हुआ है, उनको सहारा मिला है।

मारवाड़ी समाज में विधवा विवाह एक बहुत बड़ी समस्या थी। इस समस्या का कोई हल नहीं निकल रहा था। सम्मेलन ने समस्याओं का समाधान ढूंढ़ निकालने का प्रयत्न किया। सम्मेलन की प्रेरणा से राधा कृष्ण खेमकाजी ने अपनी प्रथम पत्नी के वियोग के बाद एक विधवा से पुनर्विवाह किया। असम में हमारे समाज में यह पहला विधवा विवाह था। हाल ही में नगांव शहर में भी एक ऐसा ही आदर्श विधवा विवाह का कार्य सम्पन्न किया गया। समाज का यह संस्कार संभव नहीं होता अगर इसके सभी अंग सहयोग नहीं करते। इतन ही नहीं विधवा महिल को अपने हक दिलने का हर संभव प्रयास सम्मेलन की तरफ से हो रहा है। उदाहरण के तौर पर सन् २००० को शिवसागर निवासी प्रभुदयाल जी की सुपुत्री श्रीमती राजकुमारी अग्रवाल (धर्मपत्नी स्व संजय कनोई) को हक दिलाने का भरसक प्रयास किया गया है।

१९७२ में मारवाड़ी युवा मंच का गठन किया गया। युवा मंच निरन्तर प्रगति के पथ पर है। शिक्षा, समाज सेवा, जन-कल्याण के कार्यों में आदर्श प्रस्तुत किया है। युवा मंच के कार्यक्षेत्र सबको विदित है।

यह मात्र पूर्वोत्तर सम्मेलन का एक अति छोटा चित्रण है जिसमें समाज पर गौहाटी, डिब्रूगढ़, तिनसुकिया, इम्फाल आदि में सामूहिक आक्रामक स्थितियों में समाज सुरक्षा का विशिष्ट कार्यवाही आदि कुछ अन्य घटनाओं पर जोड़ी जा सकती है। इनसे कई गुणा अधिक अन्य प्रान्तों में सम्मेलन के कृतित्व की महत्वपूर्ण चित्रण इतिहास के पन्नों में अंकित है।

सन् १९८२ में शिलांग अधिवेशन के समय 'जन कल्याण कोष' का गठन किया गया। प्रस्तुत कोष द्वारा नामघर, मंदिर आदि के पुनर्निर्माण में मदद मिलती है। बिना शुल्क नेत्र चिकित्सालयों का आयोजन किया जाता है।

मारवाड़ी सम्मेलन विभिन्न समाज में एकतात्मबोध जगाने का हमेशा प्रयत्न करता आ रहा है। पूर्वोत्तर के समाज ने सद्भावना और सद्विचारों का आदान प्रदान कराने के उद्देश्य से साहित्यिक अनुवाद का काम शुरू किया है। हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि श्रीमान त्रैलोक्य शर्मा द्वारा किया गया 'राम चरित मानस' का असमिया अनुवाद, श्रीमान जितेन्द्र नाथ शर्मा का 'सालास हनुमान'' असमिया का प्रकाशन, माधवेदव का व्यक्तित्व और कृतित्व का हिन्दी में प्रकाशन।

मारवाड़ी समाज में राजनैतिक चेतना जागृत करना भी सम्मेलन का एक उद्देश्य रहा। सन् १९८७ के दशम अधिवेशन के समय आतंकवाद के खिलाफ खड़ा होने का प्रस्ताव पारित किया गया, जिसके फलस्वरूप शंकरलाल बिरमिवाल, कुन्दनमल अग्रवाल जैसे महान व्यक्ति को खोना पड़ा। इन व्यक्तियों को खोने के बाद अवश्य कुछ दिनों के लिए सम्मेलन निष्प्रभ हो गया था पर आज सारा आसाम विश्वास के साथ आतंकवाद के खिलाफ आवाज उठा रहा है।

जिस समाज में या देश में राजनैतिक, आर्थिक और सामाजक चेतना नहीं होती वह समाज या देश मृतप्राय हो जाता है। चेतन समाज या देश ही प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकता है। अत: सम्मेलन यही चेतना जागृत करना चाहता है। सम्मेलन से हमें क्या नहीं मिला? कुछ मिले हैं, कुछ मिलेंगे, राह हम देखेंगे।

मारवाड़ी सम्मेलन के बारे में श्याम टावरी ने लिखा है-

''मारवाड़ी समाज के अधिवेशन तथा सम्मेलन मारवाड़ियों को एक मंच पर लाने का तथा संवाद साधने का सुअवसर प्रदान करती है। अधिवेशन सम्मेलन के महायज्ञ में देश प्रदेश के कोने से सभी स्तर के जातीय भाई जमा होने से गंगा के अद्भुत दर्शन का लाभ प्राप्त होता है।

इस संबंध में श्री देवीप्रसादजी केड़िया का कथन है :-

''अक्सर लोग किसी न किसी बत पर टिप्पणी करना नहीं भूलते कि समाज ने हमें क्या दिया?'' लेकिन मैं गर्व के साथ यह कहना चाहूंगा कि मारवाड़ी सम्मेलन के कारण हमें समाज में प्राप्य से अधिक प्रतिष्ठा व मान सम्मान मिला है।

इसलिए मैं कहना चाहूंगा-

''मारवाड़ी सम्मेलन की इतनी बड़ी कथाएं मैं कैसे कहूं,
क्या यह अच्छा नहीं होगा कि आपसे भी कुछ सुनुं,
और मैं चुप रहूं।

हम नदी के साथ-साथ

हम नदी के साथ-साथ
सागर की ओर गये
पर नदी सागर में मिली
हम छोर रहे :
नारियल के खड़े तने हमें
लहरों से अलगाते रहे
बालू के ढूहों से जहां-तहां चिपटे
रंग-बिरंग तृण फूल शूल
हमारा मन उलझाते रहे

नदी की नाव
न जाने कब खुल गयी
हमारी ही गांठ न खुली
दीठ न धुली
हम फिर, लौट कर फिर गली-गली
अपनी पुरानी अस्ति की टोह में
भरमाते रहे।

-अज्ञेय

हमारी कैलाश-मानसरोवर यात्रा

शांति-प्रहलादराय अग्रवाल, कलकत्ता

वर्ष २००४ के जुलाई प्रथम सप्ताह में ही भूतभावन भगवान शिव की तपोभूमि कैलाश मानसरोवर यात्रा की तैयारी शुरू हो गई। कहा गया है, ईश्वरीय अनुकंपा के बिना कुछ भी संभव नहीं, और यह तो एक बहुत बड़ी यात्रा थी। इमामी ग्रुप के संयुक्त अध्यक्ष भाई राधेश्यामजी गोयनका का जब फोन पर यह प्रस्ताव आया तब मैं आफिसियल कार्य हेतु तिरुपुर के रास्ते में मुंबई एयरपोर्ट पर था। मैंने आनन-फानन में यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। मुझे मुंबई से तिरुपुर भी जाना था। आधिकारिक कार्यों का निपटारा कर मैं राजस्थान होते हुए कोलकाता लौट आया और फिर प्रारंभ हुई पवित्रतम शिखर कैलाश दर्शन की तैयारी। इस यात्रा की सारी औपचारिकतायें ट्रैवल एजेंट के मारफत हो रही थी जिसका संचालन मनीष गोयनका द्वारा किया जा रहा था। मानसरोवर यात्रा में कुल २७ व्यक्ति शामिल हुए, जिनके नाम इस प्रकार हैं- श्री राधेश्याम गोयनका, श्रीमती सरोज गोयनका, श्री नरेशचंद्र अग्रवाल, श्रीमती वीणा अग्रवाल, श्री श्रवण कुमार तोदी, श्रीमती चित्रा तोदी, श्रीमती गायत्री तोदी, श्री मदन गोपाल तोदी, श्री रामकृष्ण अग्रवाल, श्रीमती शारदा अग्रवाल, श्री अंजनी अग्रवाल, श्रीमती अलका अग्रवाल, श्री देवेंद्र कुमार गुप्ता, श्रीमती अनीता गुप्ता, श्री मदन लाल गोयल, श्री सुरेश गोयनका, श्री सुशील गोयनका, श्रीमती इंदु गोयनका, श्री राजेश बगड़िया, श्रीमती रचना बगड़िया, श्री राजकुमार सुरेका, श्रीमती प्रीति सुरेका, श्री मनीष गोयनका, श्रीमती ज्योति गोयनका, श्रीमती ऋचा अग्रवाल एवं श्रीमती शांति अग्रवाल तथा मैं, प्रह्लाद राय अग्रवाल।

महामृत्युंजय देवादिदेव भगवान शिव की तपोभूमि कैलाश शिखर हिंदुओं के लिए ही नहीं बल्कि, बौद्ध और जैन संप्रदाय के लिए भी अमोघ तीर्थस्थली के रूप में जाना जाता है। चीन में स्थित पवित्रम कैलाश शिखर के पार्श्वपद में ही पवित्र मानसरोवर झील है। यह झील १५ मील चौड़ी और वृताकार है, जिसका पानी नीले रंग का है। हिंदुओं की मान्यता है कि इस पवित्रतम झील की ३२ परिक्रमाएं पूरी करने से जीवन पापमुक्त हो जाता है।

२७ जून २००४, दिन रविवार को ठीक दिन के डेढ़ बजे इंडियन एयरलाइंस का विमान हम सभी २७ तीर्थयात्रियों को लेकर काठमांडू के लिए उड़ चला। कुछ देर होटल में विश्राम करने के उपरान्त हम सब बाबा पशुपति नाथ के दर्शन के लिए निकल पड़े तथा वहां जाकर अपनी कैलाश यात्रा की सफलता के मुरादें मांगीं।

२८ जून सोमवार, आज की हमारी उड़ान ११.४५ बजे नेपालगंज के लिए थी। विमान से उतरने के उपरांत हम होटल वाटिका की ओर चल निकले जहां हमारा दूसरा पड़ाव था। इसके पश्चात् हमारी सैलानी टीम रिक्शे पर बैठ मां बागेश्वरी के दर्शन को निकल पड़ी। माता बागेश्वरी के मंदिर में जाकर बड़ा ही सुखद प्रतीत हुआ।

२९ जून मंगलवार, नेपालगंज हवाई अड्डे से सिमिकोट हम दो छोटे-छोटे एयरप्लेनों पर सवार होकर पहुंचे। यहां हवा में कुछ नमी थी। मौसम भीगा-भीगा सा था। इसके पश्चात पुन: हम दो ग्रुपों में बंटकर हवाईयान से (हेलीकाप्टर) हिल्सा प्रस्थान कर गये। पहला जत्था कोई १०.५० बजे के आसपास रवाना हुआ था। जो २० मिनट की उड़ान के बाद हिल्सा पहुंच गया। पुन: वह हेलीकाप्टर यान वापस लौटकर दूसरे जत्थे को सिमिकोट से हिल्सा ले गया। आकाश मार्ग से जाते हुए, नेपालगंज की सुन्दरता तथा रमणीक अमराइयों का जी भर कर अवलोकन किया। हेलीकाप्टर ने हमें करनाली नदी के किनारे उतार दिया। उस पार तिब्बत की सीमा हमारा इन्तजार कर रही थी। नदी में बने तार के पुल को पैदल ही पार करना पड़ता है। करनाली नदी तिब्बत तथा नेपाल के बीच भाजक का काम करती है। इस पुल पर बने लोहे का पहला खंभा नेपाल में है, तो दूसरा तिब्बत में।

हमारी पैदल यात्रा केवल पुल पार करने भर की नहीं थी। आगे की खड़ी चढ़ाई कुल १ घंटे की थी और हमें पैदल ही जाना था। किसी तरह चलते-रुकते चढ़ाई की ओर चढ़ते हम चीन के चेक पोस्ट सेरा पहुंचे। चढ़ाई कठिन थी। इस दौरान कुछ लोगों के साथ महिला सदस्याओं को थोड़ी परेशानी भी हुई। तिब्बती महिलाओं तथा पुरुष कुलियों ने हमारे सामानों को ढोने का काम किया। वे हमारा सामान अपनी पीठ पर लाद आगे-आगे चल पड़े।

३० जून को हमारी रवानगी कैलाश-मानसरोवर के लिए होनी थी। कोई ८ कारों का काफिला उबड़-खाबड़, कंकड़ तथा पत्थरों से पटे रास्तों से होकर गुजरता रहा। लगभग दो घंटे की यात्रा के उपरांत कोई डेढ़ बजे के आसपास हमलोग राक्षसताल लेक पहुंचे। हमारा इरादा राक्षसताल लेक परिदर्शन का था। हम सब कैमरा आदि लेकर वहां जाने को ज्योंही तैयार हुए तभी हमारे गाइड मिस्टर अशोक प्रधान ने हमें मना करते हुए कहा- वहां नहीं जाना ही बेहतर होगा।

अशोक की बातें सुनकर हमारे माथे पर बल पड़ गये। पूछा- 'क्यों' तो उसने कहा कि इस ताल के पास अदृश्य राक्षसों का निवास है। वहां जाना खतरे से खाली नहीं है। मुझे उस पर विश्वास नहीं हुआ लेकिन अशोक के मना करने पर सभी ने मान लिया। राक्षसताल लेक के दूसरी ओर कुर्लामान धाता पर्वत सीना तानकर खड़ा है। दूर से हमने उस विशाल पर्वत को देखा और पुन: चल पड़े। ठीक पौने तीन बजे हमारा काफिला मानसरोवर पहुंचा जिसकी ऊंचाई पृथ्वीतल से १४१०० फीट की बताई जाती है। पहली ही नजर में पवित्र मानसरोवर हमारी आंखों को भा गया। सरोवर का जल इतना निर्मल इतना शीतल की क्या कहें? हमारी टीम के कुछ सदस्य तो इसमें उतर आये। डुबकियां लगाई और पवित्र मानसरोवर को प्रणाम किया। कुछ सदस्य तो उसकी शीतलता से

ही प्रकंपित थे और इसलिए वे केवल शीतल जल का आचमन ही कर पाये। मानसरोवर से कैलाश हालांकि थोड़ी ही दूर पर स्थित है फिर भी पवित्र शिखर के दर्शन यहीं से होने लगे थे। कैलाश शिखर के दर्शन होते ही मन श्रद्धा और रोमांच से भर उठा जिसे मैंने पवित्र अमरनाथ की गुफा की यात्रा के दौरान अनुभव किया था।

हमलोग दारचेंग पहुंचे। पृथ्वी के तल से हम सब पहले ही काफी ऊंचाई पर थे और यहां से कैलाश परिक्रमा के लिए हमें और भी ऊंचाइयों को पार करना था। अतः ऑक्सीजन की कमी के कारण सभी यात्रीदल को सांस की तकलीफें महसूस होने लगी थीं। उल्टी, दस्त, सिर चकराने जैसी स्थिति विशेषकर महिलाओं में तथा पुरुषों में भी होने लगी थी। एहतियात के तौर पर हमने पहले ही कुछ एक दवाइयों की व्यवस्था कर रखी थीं, तिब्बतन चिकित्सक ने हमें परामर्श दिया कि परिक्रमा के दौरान खाते-पीते रहना चाहिए तथा इस एकमात्र चिकित्सक ने हमें तिब्बती जड़ी-बुटियों से बनी कुछ दवाईयां भी दी, जिससे काफी राहत मिली। परिक्रमा के दौरान इलेक्ट्राल पाउडर लेना नहीं भूले। जो यात्री कैलाश शिखर की ढाई दिन की परिक्रमा पूरी करने में असमर्थ होते हैं उनके लिए यहां परिक्रमा स्थल बना हुआ है जिसकी परिक्रमा कर लेने से ही पवित्र शिखर के ढाई दिन परिक्रमा का पुण्य लाभ प्राप्त होता है।

१ जुलाई गुरुवार, आज गुरु पूर्णिमा भी थी। एकाएक बूंदाबादी शुरू हो गई। ठंड हमें कंपकपा दे रही थी। हमलोग दारचेन पहुंचे जहां से कैलाश पर्वत की यात्रा प्रारंभ होती है। ऊंचाई काफी होने के कारण हमारे सहयात्री सदस्यों को ऑक्सीजन की कमी खली। हमारी टीम की महिला सदस्यों में कुछेक को तो उल्टी तक की शिकायत हुई। रात भर हम सभी अस्वस्थ से रहे। सबेरे कैलाश परिक्रमा में जाना था लेकिन ज्यादा घोड़े उपलब्ध नहीं होने के कारण मैं प्रह्लाद राय अग्रवाल, अंजनी अग्रवाल, रामकृष्ण अग्रवाल, राजकुमार सुरेका, मनीष गोयनका और ज्योति गोयनका ही परिक्रमा हेतु सबेरे ६ बजे निकल सके। पीछे से हमारी टीम की महिला सदस्यों को जब पुनः माथा दर्द और उल्टी की शिकायत होने लगी तो राधेश्याम गोयनका जो इनकी देखभाल कर रहे थे वे तिब्बत स्थित एक औषधि केन्द्र पर ले गये। वहां के एकमात्र डाक्टर ने कुछ जड़ी-बुटियों की दवाइयां उन्हें दी और कहा कि परिक्रमा के दौरान ऐसा होता है, इसमें घबराना नहीं चाहिये, कुछ न कुछ खाते-पीते रहना चाहिए। परिक्रमा के दौरान इलेक्ट्राल जल काफी मददगार होता है, इसे लेना नहीं भूलें।

दारचेन में जहां से कैलाश यात्रा प्रारंभ होती है, यहां एक परिक्रमा स्थल भी बनाया गया है जिसकी परिक्रमा कर लेने से कैलाश पर्वत की पूरी परिक्रमा मान ली जाती है। भाई राधेश्यामजी गोयनका और हमने पीछे से उस स्थल की परिक्रमा भी कर ली। हमलोग ६ व्यक्तियों ने परिक्रमा शुरू कर कैलाश पर्वत की चढ़ाई शुरू कर दी।

२ जुलाई दिन शुक्रवार, की सुबह हम परिक्रमा के कठिन दौर से गुजरे जहां से १८ हजार ६०० फीट की ऊंचाई पर स्थित कैलाश पर्वत के लिए हमने अपनी परिक्रमा प्रारंभ की। डोलमाला बाइपास के पहले एक बार मैं तो अपने पूरे माल असबाब के साथ घोड़े पर से गिर पड़ा लेकिन प्रभु शिव की कृपा से कोई चोट नहीं आई। यहां १७००० फीट की ऊंचाई पर यह घटना हुई थी। चढ़ते-चढ़ते हमलोग डोलमाला बाइपास पर पहुंचे जो कि अट्ठारह हजार छः सौ फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यहां से पवित्र कैलाश साफ दिखाई दे रहा था। मुझे बहुत खुशी हो रही थी। इच्छा हुई कि माता-पिताजी से बात करूं। प्रधान से सेटेलाइट फोन लेकर सीकर में अपने पूज्य माता-पिता से बातें की। पुनः छोटे भाई कुंजबिहारी से कोलकाता में बातें की। पिताजी काफी प्रसन्न हुए। उनका आशीर्वाद लिया। मौसम की आंख-मिचौली भी खूब रही। परिक्रमा मैंने तो पूरी कर ली। रामकृष्ण अग्रवाल, अंजनी अग्रवाल तथा ज्योति गोयनका एवं राजेन्द्र सुरेका भी परिक्रमा पूरी कर लिए। बाकी सदस्य नहीं जा पाये। परिक्रमा के दौरान चलने में थोड़ी कठिनाई भी हो रही थी। रास्ता उबड़-खाबड़ था। पांव देख-देख कर रखने पड़ रहे थे। ऊंचाई पर चढ़ते समय सांसों में तकलीफ आना स्वाभाविक था।

३ जुलाई शनिवार, सबेरे ही दारचेन के लिए निकल पड़े जिसकी दूरी केवल छः कि.मी. थी। हमलोग दारचेन स्थित एक लॉज में पहुंचे। वहां स्थानीय लोगों के लिए भंडारे का इंतजार हमारी टीम की ओर से किया गया। हमलोगों ने सबको खाना खिलाया और करीब ३०० पीस रूपा का थर्मोकोट जो प्रधान के साथ काठमांडू से भिजवाया था, जब इसका वितरण वहां के स्थानीय लोगों में किया तो वे आनंद से अभिभूत हो उठे।

खाना खाने के बाद मानसरोवर की यात्रा करने निकल पड़े। यह ९५ कि.मी. की यात्रा है जिसे हमलोगों ने गाड़ी में बैठकर तय की। इसके बाद परिक्रमा करते हुए हमलोग ४.३० बजे एक नये गेस्ट हाउस में पहुंचे जिसका नाम च्यू गेस्ट हाउस है। इस आश्रम को महात्मा विकास गिरि ने बनवाया है। जब हमलोग गेस्ट हाउस के बाहर विश्राम कर रहे थे उसी समय एक महात्मा वहां पर आये, उन्होंने अपना नाम विकास गिरि बताया। बातचीत के दौरान यह पता चला कि वे पास की ही एक गुफा में रहते हैं। बातों के ही क्रम में इस बात का पता चला कि वे महात्मा कोलकाता स्थित कांकुड़गाछी में रूपा के सिलाई कारखाने में कार्य कर चुके हैं। यह बात स्वयं महात्मा जी ने ही हमें बताई। महात्मा जी ने बताया कि इस गुफा में निवास के दौरान मैं नित्य यात्रियों की सेवा में लगा रहता हूं तथा यात्रा समाप्त होते ही भारत लौट आता हूं।

४ जुलाई को रविवार था। हम सब डुबकी लगाने मानसरोवर आए। ठंड कंपकंपी प्रदान कर रही थी तो क्या हुआ सरोवर में डुबकी लगाने से हम भला क्यों चूंके। मानसरोवर में प्रवेश करते ही पूरा बदन सिहर उठा। ऐसा लगा मानो हम किसी बर्फीली शिला में समा गये हों। यहां मानसरोवर में स्नान के बाद हम पूजा अर्चना के लिए विकास गिरिजी महाराज की गुफा के सामने चक्राकार स्थिति में बैठ गये। श्रवण तोदीजी एक किनारे ऊंचे आसन पर बैठे थे। पूजा की सामग्री एकत्रित की गई। महात्माजी ने हमारे हाथों सामग्री एकत्र कर पूजा अर्चना करवाई। होम भी करवाया। फिर सबने खड़े होकर मनोभाव से आनंद के साथ आरती का गायन किया। तत्पश्चात् हमने महात्मा विकास गिरि जी महाराज को दक्षिणा प्रदान कर हमलोग अपनी-अपनी कारों में बैठकर सेरा के लिए रवाना हो गये। ४ जुलाई की शाम को ही हम पुरांग पहुंचे जहां एक लॉज में सबने रात्रि-विश्राम किया।

५ जुलाई सोमवार, को ठीक सबेरे हमारा दल सेरा के लिए रवाना हो गया। लगभग पौने दो घंटे की हिचकोली यात्रा के उपरांत हम सेरा पहुंचे। यहां से हमें हिल्सा हेलीपैड तक जाना था। यहां से हिल्सा के लिए हमसब को नीचे उतरना था, यह उतराई भी कम कठिन नहीं थी। हमारी टीम की महिला सदस्यायें तो काफी घबराई हुई थी। मदन तोदीजी तो एक जगह फिसल कर गिर भी पड़े थे परन्तु भगवान शिव की अनुकम्पा ही थी कि उन्हें चोट नहीं आई। लगभग एक घंटे की उतराई के बाद तार-

पुल पार करके हमलोग हिल्सा पहुंचे। यहां सुबह के आठ बजे ही हेलिकाप्टर आने की बात थी, लेकिन जब दिन के बारह बजे तक भी हेलिकाप्टर नहीं आया तो हमारी प्रतीक्षा दम तोड़ने लगी। ऐसी स्थिति में मनीष गोयनका और हमारे गाइड मिस्टर प्रधान वापस सेरा गये वस्तुस्थिति का पता लगाने। आखिर हेलीकाप्टर आने में इतना विलंब क्यों हो रहा है। जब उन्होंने फोन कर इस बात की जानकारी हासिल की तो पता चला कि सिमिकोट में मौसम बहुत खराब है। अधिकारियों ने कहा कि शाम चार बजे तक यदि मौसम साफ नहीं हुआ, तो आज हेलीकाप्टर नहीं भेजा जा सकेगा। अंततः निराश होकर वे दोनों वापस हिल्सा लौट आये और फिर हमें इस बात की जानकारी दी कि मौसम की खराबी से हेलिकाप्टर नहीं आ पा रहा है। यह सुनते ही सबके चेहरे उतर गये। एक तो यात्रा की थकान ऊपर से खुला आसमान। हम सब काफी चिंतित हो उठे। कहीं कोई समुचित व्यवस्था ठहरने की दिखाई नहीं दे रही थी। ऐसे में एक नेपाली दंपत्ति जिसके पास केवल दो ही कमरे थे, ने हमें रात गुजारने के लिए अपना एक कमरा दे दिया। उस कमरे में हमलोग कुल २२ सदस्य रात गुजारे तथा ५ सदस्यों ने उन दंपत्ति की रसोई वाले कमरे में रात काटी। वह नेपाली व्यक्ति जिसका नाम छापर लामा था ने हमारे भोजन का प्रबंध भी कर दिया। उसने चावल दाल आदि की व्यवस्था भी कर दी। हमारी टीम की महिला सदस्यों ने भोजन पकाने में हाथ बंटाया। रात का भोजन करने के बाद हम सब किसी तरह एडजस्ट करके सो गये। सुबह शौच के लिए हमें खुले मैदान में जाना पड़ा। मौसम अभी भी खराब था। हेलिकाप्टर के आने की स्थिति अभी भी नहीं बन पा रही थी। हिल्सा में दो दिनों तक रुके रहना सबको भारी लगने लगा था। न ठहरने की व्यवस्था, न कहीं जाने की सुविधा। पास जो कुछ ड्राई फुड था वह भी खत्म हो चला। ऐसे में लामा ने हमारी काफी मदद की थी। चीन से सॉफ्ट ड्रिंक तथा खाने का सामान लाकर देता। शौच के लिए हमें नदी किनारे जाना पड़ता। औरतों को तो और भी परेशानी होती थी। अनिश्चतता की स्थिति देख बड़ी चिंता हो रही थी। एक ही कमरे में खाना बनाना और ठहरना। किसी से कोई संपर्क नहीं हो पा रहा था। फोन वगैरह के लिए एक घंटा तक पहाड़ की दुर्गम चढ़ाई चढ़नी पड़ती, ऐसी स्थिति में हम क्या करते? लामा की सहायता ने हमें उपकृत किया। वैसे मिस्टर प्रधान के भी दो-तीन आदमी हमारे साथ थे जो हमारा विशेष ख्याल रखते।

६ जुलाई को दिनभर हम हेलिकाप्टर का इंतजार करते रहे। इसी बीच हमने देखा कि एक युवती पास के ही एक नेपाली दंपत्ति के घर अस्वस्थ-सी पड़ी हुई है। हमने देखा एक नेपाली चिलम पी रहा है तो हमें भी एक फन सूझा और उस नेपाली से चिलम मांगी और मुंह में लेकर एक फोटो खिंचवाई। श्री श्रवणकुमार तोदी तथा मैंने उन लोगों से बातचीत की तो पता चला कि अस्वस्थ युवती पूना के एक सहायक पुलिस कमिश्नर शिंदे की पुत्री हैं, जिनका नाम प्रियदर्शिनी है। प्रियदर्शिनी भी एक अन्य यात्रीदल के साथ भ्रमण हेतु दारचेन गई थी।

दूसरे दिन ७ जुलाई को भी जब हेलीकाप्टर नहीं आया तो हमारा धैर्य जवाब देने लगा। एक तो हम सब स्वयं मौसम की मार झेल रहे थे। ऊपर से स्वयं को माओवादी बताते हुए दो नेपाली युवक आ टपके। मिस्टर प्रधान ने कहा कि ये लोग अमेरिकी डॉलर मांग रहे हैं तब मैंने उन्हें किसी तरह नेपाली मुद्रायें देकर अपना पिंड छुड़ाया। अंततः सबेरे ८ बजे एक हेलिकाप्टर पंख फड़फड़ाता हुआ जब आता दिखाई दिया तो हमारी कैलाश वाहिनी टीम खुशी से झूम उठी और ज्योंही हेलिकाप्टर हैलीपैड पर उतरा उसमें से नेपाली सेना के दो जवान हाथों में स्वचालित बंदूक थामें निकले और सुरक्षात्मक पोजीशन बना लिए। यह हेलिकाप्टर सेना का ही था। सेना के जवानों ने पहले तो उस अस्वस्थ युवती के बारे में पूछा प्रियदर्शिनी कहां है? फिर हमें हेलिकाप्टर में प्रवेश करने के लिए कहा। भाई सुशील गोयनका पहले तो दल की सभी महिला सदस्यों को लेकर उस पर सवार हो गये। हेलिकाप्टर उन्हें ले जाकर सिमीकोट छोड़ आया। फिर हम सब गये। सिमिकोट पहुंचकर हमने हेलिकाप्टर के पायलट से आग्रह किया कि हमें दो बार में नहीं बल्कि एक ही बार में ले जाएं। पायलट ने हमारी बात मान ली। मैंने देखा हमें बिदा करते समय श्रीमती लामा की आंखें भर आई थीं। उनकी भलमनसाहत तथा सुरूचिपूर्ण व्यवहार के हम भी तो कायल हो उठे थे। हम सबने उस दंपत्ति का आभार माना। उन्हें धन्यवाद ज्ञापित किया और सिमिकोट के लिए रवाना हो गये। हम सब जब सभी यात्री सिमिकोट पहुंच गए तो पुनः इसी फौजी हेलिकाप्टर से नेपालगंज आये। जहां प्रियदर्शिनी के पुलिस आयुक्त पिता श्री शिंदे ने हमारी अगवानी की तथा उन्होंने अपनी पुत्री की देखरेख करने के लिए हमारा आभार मानते हुए हमें धन्यवाद कहा। हमने भी श्री शिंदे को इसके लिए धन्यवाद दिया कि उनके ही सौजन्य से नेपाली सेना का हेलिकाप्टर हमें उपलब्ध हो सका था। इसके बाद श्री शिंदे अपनी बेटी को लेकर जब चले गए तब हम सब एक अतिरिक्त चार्टर विमान तथा यति एयरवेज की एक नियमित उड़ान के सहारे अपनी पूरी टीम के साथ काठमांडू चले आये। इमामी के श्री जगदीश जी राणासरिया एवं रूपा के वितरक श्री राजकुमार जी देवड़ा घर का बना भोजन लाए व हम सब को एयरपोर्ट पर खिलाया। भोजन बड़ा ही स्वादिष्ट था।

कोलकाता की ओर हमारी वापसी अब हो चली थी। काठमांडू हवाई अड्डे से इंडियन एयरलाइंस विमान हमें दमदम हवाई अड्डे की ओर लेकर उड़ चला था। लगभग एक घंटा के बाद विमान जब दमदम हवाई पट्टी पर उतरा तो हमारी सभी थकानें न जाने कहां उड़ गईं। विमान से निकलते ही हमारे परिजनों ने जब हमारी अगवानी की तो बड़ा सुखद प्रतीत हुआ। पुत्र रमेश, पुत्रवधु सीमा तथा दोनों अनुज घनश्याम एवं कुंजबिहारी, अनुज वधू ललिता एवं पूरा परिवार दमदम हवाई अड्डे पर हमारा बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। यह देखकर मन खुशी और स्नेह से भर आया। इसके उपरांत हम सब अपने-अपने परिजनों के साथ अपने आशियाने की ओर चल पड़े।

(लेखक श्री प्रह्लाद अग्रवाल चेयरमैन, रूपा एंड कंपनी एक सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी हैं।)

अंतर्जातीय : विवाह कलह के मूल कारण

वर्तमान समय में पाश्चात्य प्रभाव आधुनिकता के नाम पर अंतर्जातीय विवाहों की वकालत करना एक फैशन सा हो गया, किंतु इनमें से अधिकांश विवाहों की परिणति किस रूप में होती है और इसके दुष्परिणाम निकलते हैं, श्री भीमसेन अग्रवाल के दो टूक विचार।

सृष्टि के विस्तार हेतु नर व मादा का विवाह रूपी संबंध सर्वदा अनिवार्य है। मानव जाति विधाता की अनुपम एवं विचित्र रचना है। संपूर्ण मानव जाति एक होने के बावजूद अनेक जातियों, उपजातियों व विविध धर्मों में बंटी है और उनमें आपस में भाषा, रीति-रिवाज, खान-पान, रहन-सहन, लेन-देन, व्यवहार आदि में सर्वथा भिन्नता पाई जाती है। अधिकांश अवसरों पर इनमें तीव्र मतभेद लड़ाई-झगड़ों के रूप में भी उभरे हैं।

अंतर्जातीय विवाह के औचित्य पर समाज में एक स्वस्थ वाद-विवाद हो रहा है। विभिन्न मतों का समाज विकास मे स्वागत है। प्रकाशित विचारों से हमारी सहमति आवश्यक नहीं है। -सम्पादक

इन मतभेदों एवं विभिन्नताओं के होते अंतर्जातीय विवाह हमेशा क्लेश व कलह के कारण ही बनेंगे। चाहे हम २१वीं शताब्दी के नाम पर देश व समाज की दीवारें तोड़ने की कितनी भी ऊंची बातें करें। वैसे भी इस प्रकार के विवादों में रीति-रिवाजों, खानपान, रहन-सहन, व भाषा के अंतर भी आड़े आते हैं और ख्याली दुनिया में बना ऊंचा स्वप्नों का महल वास्तविकता की चट्टान से टकराते ही चूर-चूर होने लगता है। इसलिए स्वजाति में ही विवाह करने की हमारे यहां शताब्दियों से परंपरा रही है और कोई भी जाति चाहे कितनी भी आधुनिक क्यों न हो, अपनी ही जाति में वैवाहिक संबंधों की स्थापना को वरीयता प्रदान करती है। ये वैवाहिक संबंध अपेक्षाकृत स्थायी भी होते हैं। आज के अधिकांश अंतर्जातीय विवाह युवक-युवतियों की क्षणिक भावुकता एवं प्रेम प्रसंगों पर आधारित होते हैं, अतः वे उतने ही अस्थायी होते हैं। ऐसे विवाह वासना के वशीभूत हो क्षरिक शारीरिक सुख के लिये किये जाते हैं और प्रेम का नशा उतरते ही वे छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। ऐसे वैवाहिक संबंधों में अक्सर पारिवारिक मतभेद एवं कलह तो उभर कर आते ही हैं, एक सीमा व अल्पावधि के पश्चात ऐसे वैवाहिक संबंध अति कटुता एवं भारी वैमनस्य के बीच टूट जाते हैं या संबंधों की परिणति तलाक या संबंध विच्छेद में होती है।

अतः सर्वदेशिकता, सार्वभौमिकता के नाम पर अंतर्जातीय विवाहों की वकालत करना दो प्राणियों की जीवन नैय्या को विनाश के गर्त की ओर ढकेलना ही है। आज तक जितने भी ऐसे वैवाहिक संबंध हुए हैं, उनमें से ९० प्रतिशत से अधिक असफल एवं दो युवा-हृदयों के लिये अभिशाप ही सिद्ध हुए हैं, अतः नैतिक, धार्मिक, सामाजिक किसी भी दृष्टि से इनका समर्थन नहीं किया जा सकता। इसे इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है- मोर के साथ मोरनी, हंस के साथ हंसिनी, तोता के साथ मैना ही शोभा देती है, उसी प्रकार एक ही जाति के युवक-युवती की वैवाहिक जोड़ी सुशोभित होती है। वे ही समय की कसौटी पर खरे उतर सकते हैं।

यही कारण है कि रामायण, गीता एवं धर्म शास्त्रों में इसी प्रकार की वर्ण संकरता से सचेत किया गया है और समान जाति, कुल धर्म, शील वाले परिवारों में ही वैवाहिक संबंधों को मान्यता दी गई है। संपूर्ण सुख-शांति का आधार है- संतुलन। यदि हम नवीनता और पाश्चात्य अंधानुकरण की अंधी दौड़ में अपनी महान परंपराओं, सभ्यता, संस्कृति, मर्यादाओं का उल्लंघन कर समाज और जाति के संतुलन को बिगाड़ते हैं तो यह घोर अपराध ही नहीं, पापपूर्ण कृत्य भी है। इन अंतर्जातीय विवाहों ने हमारे समाज के संतुलन को बिगाड़ परिवारों में जो कलह के बीज बो दिए हैं, उससे हमें बलात् अपने समाज की रक्षा करनी है और इस विष-वृक्ष को जड़ से उन्मूलित कर देना है, ताकि इसकी जड़ें आगे न फैल सकें।

-साभार, अग्रोहा धाम

मान सभी को बन्धु अपना

मानव हैं हम, मानवता से मानवता की शान बनें,
मान सभी को बन्धु अपना, मानव की पहचान बनें।
जानें हर एक जीवन को, अपना मीत बनाकर,
महकायें तन-मन सबका हम, सबमें ही प्रीत जगाकर।
हर एक निराशा दूर करें, बनकर सबका विश्वास,
खुशियों में सब झूमें हर पल, जीवन में भर जाय उल्लास।
आसपास ही सबके रहकर, सबका ही सम्मान बनें;
मान सभी को बन्धु अपना, मानव की पहचान बनें।
सोच है अपनी एक ही अब तो, एक ही अपना नारा,
सबके ही सहारे चलना हमको, देना सबको सहारा।
जीत बनें हम अपनी हर पल, सबको जीत दिलायें,
अपनापन हो सबसे ही अपना, ऐसी रीत चलायें।
चलो चलें हम कदम बढ़ाकर, इक-दूजे का अरमान बनें;
मान सभी को बन्धु अपना, मानव की पहचान बनें।
सारे भेद मिटाकर अब हम, खुद अपना अनुदान बनें,
मान सभी को बन्धु अपना, मानव की पहचान बनें।

-संदीप जैन, वीरपुर

अल्लादीन का चिराग आपके पास भी तो है!!

पुष्कर लाल केडिया, कोलकाता

सुबह के चार बजे थे। मैंने फटे कपड़े पहने एक बूढ़े आदमी को सामने खड़े देखा। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी, कमर झुक गई थी और बायें हाथ में एक गठरी लटक रही थी। ऐसे असमय उसको अपने सामने खड़ा देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। कौतूहलवश मैंने उस अजनबी से उसका नाम पूछा। उसने बताया कि वह अल्लादीन है, जिसके जादुई चिराग की कहानी सारी दुनिया के लोग बड़े चाव से पढ़ते हैं।

अल्लादीन का नाम सुनते ही मेरा सारा शरीर रोमांचित हो गया और मैं पसीने से तर-ब-तर हो गया। उसने मुझे समझाया कि घबराने की कोई बात नहीं, वह तो एक मित्र की तरह मुझसे मिलने आया था।

मेरे अनुरोध पर उसने बात आगे बढ़ायी- ''मैंने एक छोटा-सा पुराना मकान खरीदा था। मकान मरम्मत कराने के लिए मैंने मजदूर लगा रखे थे। एक दिन अचानक फावड़े से किसी धातु के टकराने की-सी आवाज आयी। मैंने देखा, कुछ छोटे-छोटे टुकड़े बाहर निकले थे, जिन पर मिट्टी जम गयी थी। उत्सुकतावश मैंने ढेलों को पानी से साफ किया और जब उन्हें रगड़कर साफ किया तो मेरी आंखें आश्चर्य से फैलती चली गयी। वे मिट्टी के ढेले नहीं बल्कि सोने की मोहरें थी, जो जमीन में किसी समय गाड़ी गयी थीं। मैंने मजदूरों को तुरन्त काम बन्द करने के लिए कहा। उस समय मेरा दिमाग बड़ी तेजी से काम कर रहा था। मैं यह बिल्कुल नहीं चाहता था कि इस बात कि किसी को जरा सी भी भनक लगे। रात भर मेरा दिमाग मशीन की तरह काम करता रहा। मेरे सामने तरह-तरह समस्यायें खड़ी हो रही थी। मैंने सोचा कि यदि यह खबर फैल जायेगी तो मेरे पास वह अपार धन सुरक्षित नहीं रह सकेगा। यह धन या तो वहां के शासक के कब्जे में चला जायेगा या फिर मैंने जिससे यह मकान खरीदा है, वह दावा खड़ा कर देगा और इस तरह से मेरे ऊपर नयी आफत आ जायेगी।

सोचते-सोचते मेरे दिमाग में एक बात आई। मैंने अपने यहां कई हट्टे-कट्टे जवानों को अपनी नौकरी पर रख लिया। मैंने वहां एक ऐसी घंटी लगायी, जिसका स्विच दबाने पर आवाज के साथ रोशनी होती थी। फिर मैंने अपने इन जवानों को समझा दिया कि ज्योंही घण्टी बजे और रोशनी जले, वे मेरे सामने आ जायें और जो भी उनसे कहा जाये, करें। अलग-अलग टेक्निकल विषेशज्ञों को भी नौकरी पर रख लिया गया। मेरे पास इतना धन था कि मैं अपनी इच्छानुसार टेक्निशियनों और विशेषज्ञों को नौकरी देने में समर्थ था। मैंने अपने जवानों को विशेष ट्रेनिंग दी तथा उनके द्वारा कुछ ऐसी अजीबो-गरीब हरकतें करवायी कि धीरे-धीरे सभी जगह यह प्रचार हो गया कि मेरे पास ऐसा कोई जादुई चिराग है, जिसको रगड़ने से एक जिन सामने आता है। उसे जो हुक्म दिया जाता है, उसे वह पूरा कर देता है। मैंने मजदूरों को भी नौकरी पर रख लिया और उनके द्वारा तरह-तरह के जादुई करिश्मे रोज करवाता रहा। लोगों पर मेरा भय इतना जम गया था कि किसी ने भी असलियत जानने की चेष्टा नहीं की। मैंने हजारों मजदूरों के रखकर रातोंरात नये मकान का निर्माण कराया और तरह-तरह के वाहन बनवाये, जिनके सहारे जहां भी इच्छा होती, मैं तुरन्त पहुंच जाता था। मैं जिस चीज की इच्छा करता, उस चीज को प्राप्त होने में कोई विलम्ब न लगता, क्योंकि मेरे पास उस समय इतना धन और इतने साधन थे। मेरा स्वभाव ऐसा बन गया था कि मैं किसी भी बात में थोड़ी सी देरी भी बरदाश्त नहीं करता था, इसलिए मेरे यहां काम करने वाले इस बात से भयभीत रहते थे कि कहीं मैं उन पर किसी भूल के कारण नाराज न हो जाऊं। आमोद-प्रमोद और भोग विलास में समय काटते देर न लगी। मनचाही सभी बात मैंने जीवन में पूरी की। एक दिन अचानक यह देखकर मेरे पांव तले की जमीन खिसक गयी कि जिस जगह से खजाना खोदकर निकाला जा रहा था, अब उसके नीचे से खजाना न निकलकर मिट्टी व पत्थर का ढेर निकल रहा था। मेरे शरीर की सारी शक्ति अचानक गायब हो गयी और मुझे ऐसा लगा कि एक क्षण में मेरी उम्र बीस वर्ष बढ़ गयी है। मेरा तना हुआ शरीर झुक गया और सिर के सारे बाल सफेद हो गये। इस परिवर्तन का राज मुझे छोड़कर कोई नहीं जानता था। अब मेरे पास यह शक्ति नहीं रही कि मैं अपने सारे विशेषज्ञों, टेक्निशियनों व जवानों को नौकरी पर रख सकूं। मुझे सभी को जवाब देना पड़ा। उनकी तनख्वाह तथा बकाया चुकाने के लिए मुझे अपना मकान बेच देना पड़ा। मैंने पुनः फटेहाल बनकर अपनी पुरानी झोपड़ी में आ गया। अपना चेहरा बचाने के लिए मुझे यह प्रचार करना पड़ा कि जो जादुई चिराग मेरे पास था, वह भूल से मेरी पत्नी ने किसी और को दे दिया। अब जिन को अपने पास बुलाकर उससे काम करवाने की शक्ति मुझमें नहीं रह गयी।'

अल्लादीन की कहानी सुनकर मैंने एक गहरी सांस ली। मेरे मन में कई बातें जानने की उत्सुकता जाग उठी। मैंने अल्लादीन से पूछा- ''तुम्हारी सारी कहानी में यह बात नहीं आती कि तुमने जादुई चिराग के जिन का उपयोग दूसरों का दुःख मिटाने के लिए भी किया हो। तुम इतनी सारी मिठाइयां, इतने सारे व्यंजन अपने लिए मंगाते थे, तो क्या उसका थोड़ा भी हिस्सा दूसरे भूखे के लिए नहीं मंगा सकते थे? क्या तुम अपनी ही तरह दूसरों के लिए भी मकान नहीं बना सकते थे?' अल्लादीन मेरी बात को सुनकर उदास हो गया। उसने बड़े दुःखी मन से बताया कि दूसरों के लिए कुछ करने या इसके बारे में सोचने की बात उसके दिमाग में ही कभी नहीं आयी। मैंने कोतूहलवश पूछ- ''जिस तरह का जीवन तुमने व्यतीत किया था, क्या उसकी एक झलक मुझे भी दिखा सकते हो?' मेरी बात सुन करके उसने मुझे अपने साथ चलने के लिए कहा। हम दोनों चलकर एक बहुमंजिले मकान के सामने आ खड़े हुए। उसने अपने झोले में से चादर निकालकर मुझे दी तथा एक चादर अपने लिए रख ली। उसने चादर ओढ़ लेने के लिए कहा। उस चादर में यह विशेषता थी कि उसको ओढ़ने वाले को दूसरे व्यक्ति नहीं देख सकते थे,

किन्तु वह सब कुछ देख सकता था। हम दोनों चादर ओढ़कर आगे बढ़े। अल्लादीन ने मेरा हाथ पकड़कर एक दृश्य देखने के लिए एक ओर इशारा किया। मैंने मुड़कर देखा तो मेरी आँखों के सामने एक सुन्दर हवेली का भीतरी भाग था। अचानक किसी कमरे में से किसी ने घण्टी बजयी। घण्टी के बजते ही कमरे के दरवाजे पर रोशनी जल उठी। रोशनी जलते ही एक व्यक्ति कहीं से आकर कमरे में गया। कुछ क्षण बाद वह बाहर आया और कहीं से जाकर प्लेट में तरह-तरह की मिठाइयां और चाय लाकर फिर उसी कमरे में चला गया। थोड़ी देर के बाद मैंने देखा कि एक सूटेड-बूटेड व्यक्ति किसी कमरे से बाहर निकला और अपने लिए तैयार खड़ी मोटर में बैठकर, अपने मकान के पिछले हिस्से में गया, जहां उसके लिए एक जहाज खड़ा था। कुछ ही क्षणों में जहाज में बैठकर हमारी आंख से ओझल हो गया। अल्लादीन ने अपनी जीवन में जो वैभव देखे थे, वे सभी वहां देखने के मिले। अल्लदीन को अपने जीवन के पुराने दिन याद आ गये और उसकी आंखों से पानी बहने लगा। मैं उसके साथ अपने घर लौटा। मैंने उससे अपने यहां चाय पीने का अनुरोध किया। चाय पर उससे और कई तरह की बातें होने लगी। उसने अपने जीवन के अनुभव बताते हुए कहा कि उसकी ही तरह आज कितने ही धनी ऐसे हैं जो अपने धन रूपी जादुई चिराग से अपनी सारी इच्छाएं पूरी कर रहे हैं।

उसने कहा- ''मैंने अपने जीवनमें सबसे बड़ी गलती यही की कि मैंने कभी भी दूसरों के हित की बात नहीं सोची। यदि मैं अपने धन से उस समय कोई स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, धर्मशाल आदि बनवा सका होता तो मेरे पास पैसा न रहने पर लोग उसकी मरम्मत करवाते, देखभाल करवाते, देखभाल करते और इस तरह मेरा नाम सबकी जुबान पर रहता। दीन अवस्था में दर-दर की ठोकरें खाते रहने पर भी लोग मुझे सम्मान की दृष्टि से देखते।'' मैंने देखा कि पश्चाताप के आँसू उसकी आँखों से लगातार बह रहे थे। उसको देखकर मैं भी अपने आपके नहीं रोक सका और मेरी भी आँखों से आँसू बहने लगे।

तभी अल्लादीन की नजर मेरे कमरे की दीवार पर टंगी हुई लक्ष्मी की तस्वीर पर जाकर टिक गई। वह बड़े ध्यान से लक्ष्मी और उनके वाहन उल्लू को देखता रहा। फिर उसकी आँखें उस तस्वीर के पास ही झूलती हुई एक दूसरी तस्वीर पर पड़ी जो गरुड़ पर बैठे हुए लक्ष्मी-नारायण की थी। अल्लादीन को यह समझते देर नहीं लगी कि धन और सौभाग्य की देवी लक्ष्मी जब अकेली कहीं जाती हैं तो वे उल्लू पर सवार होती हैं, जो अशुभ नैतिकता और अनिष्टों का प्रतीक है। किन्तु वही लक्ष्मी जब श्रीनारायण (सद्प्रवृत्तियों और सत्कर्मों) के साथ आती हैं तो उनका वाहन गरुड़ होता है, जो मंगल, पुण्य, परोपकार और अक्षय कीर्ति का प्रतीक है। बात पूरी तरह से समझ में आते ही अल्लादीन इतनी जोर से हँसा कि उसकी अवाज मेरे कमरे में गूंज उठी। वह बड़ी देर तक हँसता ही रहा। मेरी आँख अचानक खुल गई। सदियों पहले का वह अद्भुत इन्सान अल्लादीन एकाएक गायब हो गया लेकिन दीवार पर टंगी लक्ष्मी की तस्वीर हवा में हिल रही थी- अल्लदीन के चिराग का रहस्य अपने में समेटे हुए।

२० अप्रैल २००६ को एक प्रसिद्ध हिन्दी समाचार पत्र में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू बुश ने वाशिंगटन में मेरीलैण्ड के राकविले के एक स्कूल में छात्रों को संबोधित करते हुए अपने देश के सभी छात्रों को आगाह किया है कि अगर वे भारत और चीन के छात्रों से मुकाबलाा करने लायक क्षमता का विकास नहीं करते तो भविष्य में आने वाली नौकरियां इन्हीं देशों के लोगों को मिलेगी। उन्होंने छात्रों से गणित और विज्ञान की शिक्षा पर विशेष रूप से ध्यान देने की अपील की।

यौवन : जापानी व्यवसाय जगत का सर्वप्रिय संदेश

जवानी जीवन का कोई कालखंड नहीं, मस्तिष्क की एक अवस्था है। यह लाल गाल, लाल होंठ और लचीले घुटने से नहीं, इच्छा शक्ति की कल्पनशीलता और भावनाओं के ओज से आती है। यह जीवन के गहरे सोतों में उभरनेवाली ताजगी है। यौवन का अर्थ भीरूता पर साहस का, आरामतलवी के अनुराग पर उद्यमशीलता का प्रभुत्व है। अक्सर यह २० वर्ष के नौजवान से अधिक ६० वर्ष के व्यक्ति में होता है। वर्ष भले ही चमड़ी में झुर्रियां पैदा कर दे, लेकिन उत्साह छोड़ देने से तो दिल में झुर्रियां पैदा हो जाती है। चिंता, भय, उत्साह का न रहना हृदय को झुका देते हैं और आत्मविश्वास को मिट्टी में मिला देते हैं। आदमी ६० वर्ष का हो या १९ वर्ष का हर मनुष्य के मन में कौतुक का आकर्षण और जीवन जीने का उत्साह रहता है। आपके और मेरे दिल में भी एक बेतार केन्द्र है इसमें जब तक मनुष्य और अदृश्य से सौन्दर्य, आशा, धैर्य, साहस और शक्ति का संदेश पाने का सामर्थ्य है तब तक आप युवा बने रहेंगे। जब तक आप आदर्शवादिता की तरंगों को पकड़ते रहेंगे तो सच मानिये आप ८० साल के होकर भी मन से युवा ही बने रहेंगे।

-बाबूलाल धनानि
पूर्व अध्यक्ष गनी ट्रेड
एसोसियेशन कोलका

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

युग पथ चरण

कोलकाता- सम्मेलन भवन का मनाया गया तृतीय वर्षगांठ

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने अप्रैल २००३ में २५ राजा राम मोहन सरणी स्थित एक भवन को क्रय कर 'अपना भवन' के सपने को साकार किया था। ११ अप्रैल २००३ को रामनवमी के पुण्य अवसर पर पूजन हवन के साथ सम्मेलन भवन की प्रक्रिया का शुभारंभ किया गया। तब से प्रतिवर्ष रामनवमी के दिन भगवान राम की पूजा अर्चना कर सम्मेलन भवन का वर्षगांठ मनाया जाता है। इस वर्ष ७ अप्रैल

बाएं- सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका आरती करते हुए। उपस्थित हैं पदाधिकारी गण।

दाएं- पूजनोपरान्त सामूहिक फोटो में हैं सर्वश्री बंशीलाल बाहेती, सीताराम शर्मा, उपाध्यक्ष, मोहनलाल तुलस्यान अध्यक्ष, रामऔतार पोद्दार संयुक्त महामंत्री, भानीराम सुरेका महामंत्री, प्रेम सुरेलिया एवं कर्मचारी वृन्द।

को प्रात: रामनवमी के शुभ अवसर पर भगवान राम की आराधना कर भवन का तीसरा वर्षगांठ मनाया गया। पूजन में सम्मिलित थे सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वश्री मोहनलाल तुलस्यान, उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, महामंत्री भानीराम सुरेका, संयुक्त महामंत्री रामऔतार पोद्दार तथा कार्यकारिणी सदस्य श्री बंशीलाल बाहेती, श्री प्रेम सुरेलिया एवं सम्मेलन के कर्मचारी वृन्द।

दी राजस्थान फाउण्डेशन, लन्दन- नये पदाधिकारी निर्वाचित

१९ मार्च २००६ को आयोजित बैठक में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से सम्बद्ध 'दी राजस्थान फाउण्डेशन' लन्दन, के बोर्ड आफ डायेक्टर को गठित किया गया।

श्री गोकुल बिन्नानी- अध्यक्ष, श्री अशोक संचेती- उपाध्यक्ष, श्री संजय अग्रवाल- सचिव निर्वाचित हुए। बोर्ड के अन्य निर्वाचित सदस्य हैं श्री बी.एन. सिंघानिया, श्री बी.सी. अग्रवाल एवं श्रीमती संगीता कानोड़िया।

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

गुवाहाटी- पदाधिकारियों का दौरा

दिनांक ३ व ४ फरवरी को प्रादेशिक अध्यक्ष, विजय कुमार मंगलूनिया, प्रादेशिक महामंत्री बजरंगलाल नाहटा एवं कार्यकारिणी सदस्य, पवन गाड़ोदिया ने ऊपरी असम के बोकाखात, जोरहाट, टियक, गौरीसागर, शिवसागर, नाजिरा, सिमलगुड़ी, सोनारी, मोरान, डिब्रूगढ़, तिनसुकिया, माकुम, डिगबोई, मारग्रेटा तथा दुमदुमा शाखाओं का संपर्क दौरा किया। इस दौरान सभी शाखाओं ने बहुत ही उत्साह दिखाया। इस संपर्क दौरे के दौरान सभी शाखा पदाधिकारियों ने अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया है। जिनमें प्रमुख हैं- काशीराम चौधरी, बाबूलाल गगड़, रामाऔतार बिहाणी, समीर मोदी, सत्यनारायण दाधीच, शुभकरण शर्मा, विजय चितावत, शालीग्राम हरलालका, कन्हैयालाल हरलालका, शंकरलाल शर्मा, अरुण लाहोटी, देवीप्रसाद हरलालका, नेमीचंद ओसवाल, अनूपसिंह राजपुरोहित, ओमप्रकाश गोडोदिया, रामगोपाल मोदी, वसन्त गाड़ोदिया, कुन्दनमल शर्मा, सुरेश खेतान, राजेश विरमीवाल, परशराम केजड़ीवाल, डी.पी. गोयल, पवन गोयल, आनंद गोयल, सन्तोष सांगानेरिया, सावरमल अग्रवाल, जगदीश प्रसाद चाण्डक, पवन सांगानेरिया, रामनिवास जिन्दल, संजय अग्रवाल।

राहा- डा. रवीन्द्र नारायण चौधरी की कृति का विमोचन

९ फरवरी श्रीमंत शंकरदेव संघ के महारजत जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित पंचदिवसीय कार्यक्रम में सम्मेलन के राहा शाखा के अध्यक्ष श्री मांगीलाल चौधरी के कर-कमलों से डा. रवीन्द्र नारायण चौधरी की मूल कृति का डा. मोनिका सैकिया द्वारा हिन्दी अनुवादित ग्रन्थ का

विमोचन किया गया। असम के इस सर्वोत्तम धार्मिक अनुष्ठान में कम से कम दस लाख भक्त सम्मिलित थे। समारोह में श्री चौधरी के अभिभाषण को मान्यता देकर एक प्रस्ताव पारित किया गया। शाखा मंत्री श्री पुरुषोत्तम शर्मा ने उक्त जानकारी दी।

नौगाँव- मतदाताओं की जागरूकता हेतु प्रार्थी परिचय सम्मेलन

२ अप्रैल! आगामी विधान सभा चुनाव के मद्देनजर नौगांव विधानसभा क्षेत्र के मतदाताओं की जागरूकता हेतु सम्मेलन की नौगांव शाखा द्वारा एक प्रार्थी परिचय सम्मेलन का आयोजन किया गया। शाखाध्यक्ष श्री बजरंगलाल नाहटा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर उपस्थित सम्मेलन के प्रादेशिक अध्यक्ष श्री विजय कुमार मंगलूनिया ने असम के विकास में मारवाड़ी समाज के अवदान का जिक्र करते हुए समाज की अनेकों विभूतियों का स्मरण दिलाया। पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष श्री प्रहलाद राय तोदी ने समाज के प्रत्येक व्यक्ति से अपने वोट की कीमत समझाते हुए मतदान की अपील की। उपस्थित प्रार्थीगणों में थे सर्वश्री प्रफुल्ल कुमार महंत (असम गण परिषद प्रमुख एवं पूर्व मुख्यमंत्री) डा. दुकर्म चमुआ (कांग्रेस) जयन्त कुमार नाथ (भाजपा)।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

भागलपुर : प्रादेशिक समिति एवं स्थायी कोष की बैठक सम्पन्न

२६ मार्च। बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की प्रादेशिक समिति की बैठक प्रादेशिक अध्यक्ष श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला की अध्यक्षता में भागलपुर में हुई जिसमें महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। सभा को सम्बोधित करते हुए प्रान्तीय अध्यक्ष श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला ने उपस्थित महानुभावों का स्वागत किया तथा पुराने कार्यकर्ताओं के कार्यों की सराहना की। रावतमल नोपानी छात्रावास एवं रामेश्वरलाल नोपानी विद्या मन्दिर की चर्चा खास रूप से करते हुए कहा कि ये दोनों संस्थाएं सम्मेलन के द्वारा संचालित हैं जो सक्रिय रूप से कार्य कर रही हैं। समाज में पलायन करने वालों का सिलसिला रूका है यह बिहार के लिए एक अच्छी बात है। मारवाड़ी समाज बिहार के विकास पर सोचता है। सरकार को भी हमारे लिए सोचना चाहिए। संगठन को आगे बढ़ाने के लिए संस्था को व्यक्ति से अधिक महत्वपूर्ण मानना होगा। काम बढ़ाने के लिए फंड कैसे आये इस पर सोचना चाहिए। प्रमंडलीय पदाधिकारियों के दौरे पर खर्च प्रादेशिक कार्यालय करे, ऐसा नियम बनाना होगा। कार्यकर्ताओं की उपलब्धि पर चर्चा करते हुए अपनी पहचान बनाने का सुझाव दिया एवं राजनैतिक चेतना जागृत करने का अनुरोध किया। पंचायत चुनाव में महिलाओं को आगे बढ़ाने एवं उनकी भागीदारी बढ़ाने का आग्रह किया, उन्हें मान-सम्मान देने का अनुरोध किया।

श्री झुनझुनवाला ने कहा कि मारवाड़ी समुदाय ने धर्मशाला शिक्षण संस्थान व मन्दिरों के निर्माण तथा सामाजिक गतिविधियों में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। पर वर्तमान समय में यह समुदाय अपनी व्यापारिक प्रतिस्पर्धा के कारण सामाजिक क्षेत्र में कम रूचि ले रहा है जो चिन्ता का कारण है। इस समुदाय को गतिशील बनाने के लिए अधिक से अधिक समाजिक गतिविधियों में अपनी भगीदारी सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। इसके लिए प्रखंड स्तर पर मारवाड़ी समुदाय को संगठित होने की आवश्यकता है। आपने अस्पताल चलाने का सुझाव देते हुए मारवाड़ी चिकित्सा सेवा समिति के कार्यों पर प्रकाश डाला और डा. मोदी के नेतृत्व में वहां चल रहे कार्यों की सराहना की। आपने धर्मशाला में स्कूल एवं चिकित्सा चलाने पर बल दिया। आपने सदस्यता अभियान में तेजी लाने का भी आग्रह किया। उसी दिन संध्या को स्थायी कोष की बैठक को सम्बोधित करते हुए प्रादेशिक अध्यक्ष श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला ने जानकारी दी कि संगठन को मजबूत बनाने एवं कोष में वृद्धि हेतु प्रादेशिक समिति के सभी सदस्यों को वंशानुगत एवं आजीवन सदस्य बनाने हेतु लक्ष्य दिया गया है।

पटना- डा. राम मनोहर लोहिया जयन्ती आयोजित

२ अप्रैल! बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति द्वारा महान समाजवादी नेता डा. राममनोहर लोहिया जयन्ती के अवसर पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। पथ निर्माण एवं पर्यटन राज्य मंत्री श्री नन्दकिशोर यादव ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कहा कि शिक्षा के विकास के लिए सरकार पूरी तरह प्रयासरत है। जल्द ही शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक सुधार किए जाएंगे। प्रो. डा. एस.एस. तुलस्यान ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में बताया कि शिक्षा समिति लगभग ५६ वर्षों से समाज के छात्र-छात्राओं के विकास के लिए ऋण छात्रवृत्ति प्रदान कर रही है। समारोह के मुख्य वक्ता श्री एस.एन. सिन्हा, मुख्य अतिथि श्री रामनिरंजन केडियाा सहित सर्वश्री विजय कुमार बुधिया, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला, शिक्षा समिति के महासचिव प्रहलाद शर्मा ने भी समारोह को सम्बोधित किया। इस अवसर पर मेधावी छात्र-छात्राओं को नगद राशि, प्रशिस्त पत्र एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। सामाजिक क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने के लिए श्री मोतीलाल सुरेका, दरभंगा, श्री लक्ष्मीनारायण डोकनिया, भागलपुर, श्रीमती उर्मिल बंका, मुजफ्फरपुर एवं श्री अनूप अनुपम, धनबाद को भी प्रतीक चिन्ह एवं अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

जूनागढ़ :- श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल पुनः अध्यक्ष निर्वाचित

१० अप्रैल। मारवाड़ी महिला समिति जूनागढ़ का वर्ष २००६-०८ के सत्र के लिए किए गए चुनाव में वर्तमान अध्यक्ष श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल को निर्विरोध पुनः अध्यक्षा निर्वाचित किया गया। पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी निम्नानुसार है :-

अध्यक्ष- श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल, उपाध्यक्ष- श्रीमती सन्तोष गोयल, सचिव- श्रीमती आशा देवी खेमका, सह सचिव- श्रीमती प्रेमलता जैन, कोषाध्यक्ष- श्रीमती मीना अग्रवाल, विशिष्ट सलाहकार- श्रीमती चन्द्रकला अग्रवाल एवं श्रीमती सांतादेवी बंसल, कार्यकारिणी- श्रीमती कोमल अग्रवाल, चंदा खेमका, सुनिता इंडियन, अनिता अग्रवाल, शशि प्रभा निगानिया, सुशीला बंसल, गायत्री गर्ग, संतोष अग्रवाल, शारदा गोयल एवं निर्मला अग्रवाल।

जूनागढ़ : इन्द्रधनुषी होलिकोत्सव २००६ आयोजित

१७ मार्च। मारवाड़ी महिला समिति जूनागढ़ द्वारा इन्द्रधनुषी होलिकोत्सव २००६ का भव्य आयोजन किया गया। रीमिक्स इंडिया धमाल, राधाकृष्ण जुगल जोड़ी आनन्द मेला, मटकीफोड़ प्रतियोगिता, धमाकेदार सरप्राइज कूपन कार्यक्रम के विशेष आकर्षण थे। समिति की सचिव कोमल अग्रवाल ने स्वागत भाषण दिया तथा अतिथियों का परिचय कराया। अतिथियों में प्रमुख रूप से समिति के मुख्य सहयोगी श्री माणिकचन्द्र अग्रवाल सहित उपस्थित थे सर्वश्री वेद प्रकाश गोयल, बीसूराम अग्रवाल, ललित अग्रवाल, संजय अग्रवाल, राजन जैन, नरेश गर्ग, निरंजन पाढी, रामावतार बंसल, पुरुषोत्तम बंसल, सुभाष अग्रवाल आदि। अध्यक्षा श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल ने सभी को होली की शुभकामनाएं दी एवं सभी बहनों को रंग गुलाब लगाया। स्वागत एवं होली गीत चन्दा खेमका, सारिका अग्रवाल, सुनीता इंडियन एवं संतोष गोयल ने प्रस्तुत किया। रीमिक्स इंडिया धमाल में छोटी-छोटी बच्चियों, युवतियों एवं बहुओं ने डांडिया प्रस्तुत किया। पूजा अग्रवाल और नम्रता बंसल ने श्याम आया और भैया यशोदा गीत पर नृत्य प्रदर्शन किया। मटकी फोड़ प्रतियोगिता में श्रीमती अनिता अग्रवाल बिजयी रहीं एवं सरप्राइज कूपन श्रीमती ममता खेमका के नाम रही। अतिथियों द्वारा सभी को अन्त में पुरस्कृत किया गया।

जूनागढ़- नवरात्र भजन 'उत्सव' सम्पन्न

५ अप्रैल। नवरात्र की षष्ठी पर मारवाड़ी महिला समिति ने 'नवरात्र भजन उत्सव' का आयोजन किया जिसमें समिति की सभी सदस्याओं सहित भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। अध्यक्ष श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल ने उत्सव का शुभारंभ विनायक वन्दना से करते हुए माँ दुर्गा की आराधना की एवं मंदिर का महत्व प्रतिपादित किया।। श्रीमती आशा देवी खेमका, चन्दा देवी खेमका, चन्द्रकला अग्रवाल, सारिका अग्रवाल, प्रभा देवी एवं ममता देवी ने माँ का सोलह श्रृंगार किया। सीमा जैन, सारिका अग्रवाल, अनिता अग्रवाल, चन्दा खेमका और कोमल अग्रवाल ने ढोल मृदंग हार्मोनियम की लय पर गीत एवं भजन प्रस्तुत किए। मोनु खेमका के संचालन में नन्हें बच्चों ने नृत्य प्रस्तुत किए। समिति द्वारा मन्दिर में दरी प्रदान करने की घोषणा की गयी। स्थानीय गायत्री मन्दिर में नवरात्रि के नौ दिनों तक भक्तिमय पूजा-आराधना हुई। कार्यक्रम का संचालन गायत्री परिवार ट्रस्ट द्वारा किया गया जिसमें श्रीमती कांता देवी एवं सुशीला देवी बंसल ने अथक सहयोग दिया। अन्त में यज्ञ हवन द्वारा नवरात्रि

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

कोलकाता : शपथ ग्रहण समारोह

१.४.२००६। अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की कोलकाता शाखा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री अनिल कुमार डालमिया एवं नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यालय में आयोजित किया गया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री श्रवण अग्रवाल ने नव-निर्वाचित अध्यक्ष तथा प्रान्तीय अध्यक्ष डा. संजय अग्रवाल ने नवगठित कार्यकारिणी के सदस्यों को शपथ ग्रहण करवायी। इस अवसर पर श्री अनूप सांगानेरिया को शाखा सचिव एवं श्री निर्मल चौधरी को शाखा कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया। समारोह में प्रान्तीय महामंत्री सर्वश्री मुकेश खेतान, प्रान्तीय उपाध्यक्ष विमल चौधरी, शम्भु चौधरी, विजय झुनझुनवाला, सज्जन बेरीवाल एवं मंच के अनेक गणमान्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

मारवाड़ी युवा मंच कोलकाता शाखा की नयी कार्यकारिणी (२००६-२००७) इस प्रकार है :- सर्वश्री अनिल कुमार डालमिया- अध्यक्ष, सज्जन बेरीवाल, निवर्तमान अध्यक्ष, विजय कुमार झुनझुनवाला - उपाध्यक्ष, रवि भालोटिया- उपाध्यक्ष, संदीप जालान- उपाध्यक्ष,अनूप सांगानेरिया- सचिव, राजीव अग्रवाल- संयुक्त सचिव, निर्मल चौधरी- कोषाध्यक्ष, दीपक चौधरी- जनसम्पर्क अधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों के रूप में सर्वश्री विमल चौधरी, प्रवीण सराफ, राजा राम बंग, निर्मल नगालिया, संदीप सेक्सरिया, अनूप अग्रवाल, सुशील गनेरीवाल, धर्मेन्द्र केजड़ीवाल, गोविन्द प्रकाश गोयनका, रवि कानोड़िया एवं चन्द्र प्रकाश अग्रवाल। विशेष आमंत्रितों में थे श्री शम्भु चौधरी एवं श्री राजकुमार गौरीसरिया।

कांटाबाजी- नव निर्वाचित पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह

युवा मंच कांटाबाजी शाखा एवं मिडटाउन (महिला) शाखा द्वारा उत्कल दिवस के अवसर पर २०वां वार्षिक कार्यक्रम एवं सत्र २००६-०७ हेतु नव निर्वाचित पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि श्री प्रदीप कुमारा बंका, रेंजर, वन विभाग ने कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कहा कि युवा मंच का तात्पर्य मारवाड़ी युवाओं का एक उत्कृष्ट सशक्त सेवा भावी जन सेवी सामाजिक संगठन है। सम्माननीय अतिथि श्री अनिल अग्रवाल के अध्यक्ष चेम्बर ऑफ कामर्स एंड इंडस्ट्रीज ने युवा मंच के कार्यों की प्रशंसा की।

शपथ विधि अधिकारी श्री जय प्रकाश लाठ ने कांटाबाजी शाखा के नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री मुकेश जैन, शाखा मंत्री श्री मनोज अग्रवाल

कोषाध्यक्ष श्री कनोज अग्रवाल, मिडटाउन महिला शाखा की नव निर्वाचित अध्यक्षा श्रीमती संगीता अग्रवाल, शाखा मंत्री कुमारी आरती बंसल एवं दोनों शाखाओं की कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ पाठ करवाया।

शपथ ग्रहण के पश्चात् शाखा अध्यक्ष श्री मुकेश जैन ने मंच दर्शन के तहत कार्य करते हुए कांटाबाजी शाखा की पहचान प्रान्तीय व राष्ट्रीय स्तर पर बनाए रखने की बात कही। कार्यक्रम में सत्र २००५-०६ हेतु श्री कैलाश अग्रवाल को सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रम संयोजक, श्री आशीष खेतान (पत्रकार) को सर्वश्रेष्ठ कार्यकारिणी सदस्य व श्री दीपक वर्मा को सर्वश्रेष्ठ सदस्य का पुरस्कार दिया गया।

निवर्तमान शाखाअध्यक्ष श्री नारायण अग्रवाल ने समारोह की अध्यक्षता की। मिडटाउन महिला शाखा की निवर्तमान अध्यक्षा श्रीमती ममता जैन ने नवरात्रि की बधाई दी। अन्य शाखा के मंत्री श्री मुकेश जैन व आरती बंसल ने सचिव का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। मंच संचालन श्री कैलाश अग्रवाल ने किया।

कांटाबाजी- ४९ स्थानों पर अमृतधारा परियोजना संचालित

कांटाबाजी। उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी युवा मंच की षष्ठम कार्यकारिणी समिति की पंचम कार्यकारिणी बैठक झारसुगुडा शाखा के आतिथ्य में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रान्तीय अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल ने बताया कि उत्कल प्रान्त में मंच की ५९ शाखाएं सक्रियता से कार्य कर रही हैं जिसमें राष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत ४९ स्थानों पर 'अमृतधारा' स्थायी पेय जल सेवा संचालित की जा रही है। राष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत ही पूरे उत्कल प्रान्त को विकलांग विहिन करने हेतु पुनः विभिन्न स्थानों पर निःशुल्क कृत्रिम पैर प्रत्यारोपण शिविर आयोजित किये जाएंगे।

प्रान्तीय महामंत्री श्री जगदीश गोलपुरिया ने अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कोषाध्यक्ष श्री ललित अग्रवाल ने आय-व्यय का ब्यौरा रखा। मंडलीय उपाध्यक्षों व समिति संयोजकों ने अपनी-अपनी प्रगति विवरणी प्रस्तुत की। कार्यशाला के प्रान्तीय संयोजक श्री राजेश अग्रवाल ने क्षेत्रीय कार्यशाला आयोजन करने का अनुरोध किया।

बैठक में निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुल्तानिया, निवर्तमान राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कैलाश अग्रवाल, वर्तमान राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री जयप्रकाश लाठ, संस्थापक प्रान्तीय अध्यक्ष श्री जुगलकिशोर सुल्तानिया, संस्थापक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश बोन्दिया, संस्थापक प्रान्तीय महामंत्री श्री सुरेश मोरू के साथ कई राष्ट्रीय व प्रान्तीय पदाधिकारियों ने उद्बोधन दिया।

बैठक को सफल बनाने में मारवाड़ी युवा मंच, झारसुगुडा शाखा के अध्यक्ष श्री नवल किशोर माहेश्वरी, नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री नटवर शर्मा, निवर्तमान अध्यक्ष श्री राकेश टिबरेवाल, शाखा मंत्री श्री मनीष डिवानिया, कोषाध्यक्ष श्री नारायण प्रसाद तथा सभी सदस्यों ने अहम् भूमिका निभाई। जन-सेवा व समाज-सुधार के द्वारा राष्ट्रीय विकास में योगदान करने का बैठक में निर्णय लिया गया एवं प्रान्तीय इकाई को और मजबूत करने की बात सभी ने कही।

मोतीपुर :- नेत्र जांच शिविर सम्पन्न

२७ फरवरी। मारवाड़ी युव मंच की मोतीपुर शाखा के तत्वावधान में निःशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर में २०० लोगों का नेत्र परीक्षण किया गया। परीक्षण के दौरान मोतियाबिन्द से पीड़ित ५० लोग पाये गये।

११ मार्च। मंच के तत्वावधान में नरियार गांव में नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया जिसमें ३० लोगों को मोतियाबिंद से ग्रसित बताया गया। इस अवसर पर डा. राजीव कुमार चौधरी संजय अग्रवाल, संदीप जालान, आदि मौजूद थे।

१९ मार्च। मोतीपुर शाखा के तत्वावधान में बरूराज गांव में शिविर लगाकर नेत्र रोगियों की मुफ्त जांच की गयी। शिविर में १२५ लोगों के नेत्रों की जांच की गयी जिसमें ७ मोतियाबिन्द के रोगी पाए गए। शिविर में मोतियाबिन्द रोगियों के निःशुल्क चक्षु आपरेशन की घोषणा की गयी।

अन्य संस्थाएं

कोलकाता : राजस्थान परिषद ने मनाया ५७वां राजस्थान दिवस समारोह

प्रमुख सामाजिक संस्था राजस्थान परिषद ने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान की अध्यक्षता में ५७वें राजस्थान दिवस समारोह का धूमधाम से पालन किया। प्रधान अतिथि के रूप में पूर्व सांसद चिन्तक तथा लेखक एवं राजस्थान भाजपा के अध्यक्ष डा. महेश चन्द्र शर्मा के साथ राजस्थान पत्रिका के संपादक श्री गुलाब कोठारी, ताजा टीवी चैनल के निदेशक श्री विश्वम्भर नेवर एवं एमआईसी पार्क श्री फैयाज अहमद खान भी समारोह में उपस्थित थे। समारोह में परिषद द्वारा प्रकाशित स्मारिका २००६ का लोकार्पण श्री गुलाब कोठारी ने एवं कन्हैयालाल सेठिया समग्र (हिन्दी-१) ग्रन्थ का लोकार्पण डा. महेश चन्द्र शर्मा ने किया।

डा. शर्मा ने कहा कि यह सुखद संयोग है कि राजस्थान की स्थापना के समय ५७ वर्ष पूर्व भारतीय तिथि नववर्ष की प्रतिपदा एवं ३० मार्च जैसे एक साथ पड़े थे वैसा ही आज हो रहा है। यद्यपि बाद में नववर्ष को भूल कर हम लोग ३० मार्च को ही राजस्थान स्थापना दिवस मनाने लग गए पर सरदार पटेल ने उस दिन नववर्ष होने को पूरे जोर से रेखांकित किया था। डा. शर्मा ने इस बात पर दुःख प्रकट किया कि आजादी के पहले तक हमारे व्यवसाय की भाषा देशी थी पर आजादी के बाद इस क्षेत्र में एवं जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी विदेशियत बढ़ी है। हम प्रवाह पतित होकर बिना ठीक से विचारे भूमंडलीकरण का हिस्सा बन गए हैं एवं उसी में गौरव बोध कर रहे हैं। आज जहां खड़े हैं उस पर गंभीर आत्मलोचन की आवश्यकता है।

डा. शर्मा ने श्री जुगलकिशोर जैथलिया द्वारा सम्पादित कन्हैयालाल सेठिया समग्र (हिन्दी-१) ग्रन्थ का लोकार्पण किया तथा परिषद एवं सम्पादक मंडली को बधाई देते हुए कहा कि श्री सेठिया राजस्थानी के तो सिरमौर कवि हैं ही हिन्दी की उनकी रचनाएं भी हिन्दी के किसी भी श्रेष्ठ कवि से कम नहीं हैं। प्रधान वक्ता श्री विश्वम्भर नेवर ने कहा कि राजस्थानी समाज साम्प्रदायिक सौहार्द एवं एकता का प्रतीक है। ये लोग जहां भी गए हैं वहीं के समाज जीवन के अंग बन गए हैं। उन्होंने बाल विवाह जैसी रूढ़ियों के विरुद्ध जागृति का आह्वान किया। श्री गुलाब कोठारी ने कहा कि बंगाल के मुख्यमंत्री ने उनसे वार्तालाप में राजस्थानियों की भूमिका की प्रशंसा की है। डा. उषा द्विवेदी ने सेठिया समग्र ग्रन्थ के बारे में विशद प्रकाश डाला एवं हिन्दी के अन्य वरिष्ठ कवियों से उनकी रचनाओं की तुलना करते हुए कहा कि कम शब्दों में बड़ी से बड़ी बात कह देना सेठिया जी के साहित्य की अपनी विशेषता है एवं इस क्षेत्र में वे सबसे आगे हैं। परिषद के अध्यक्ष श्री शार्दुल सिंह जैन ने अतिथियों का स्वागत किया एवं परिषद के कार्यों पर प्रकाश डाला। महाराणा प्रताप के नाम से सड़क का नामकरण एवं पार्क का नामकरण परिषद की जैसी बड़ी उपलब्धि है वैसी ही साहित्यिक क्षेत्र में श्री सेठिया के पूरे साहित्य की प्रकाशन योजना भी है। नगर निगम के एमआईसी (पार्क) फैयाज अहमद खान ने कोलकाता को मिनी राजस्थान बताते हुए कहा कि यहां राजस्थानी संस्कृति की अमिट छाप है। राजस्थानी लोग सामाजिक कार्य भी खूब करते हैं। उन्होंने राजस्थान परिषद द्वारा महाराणा प्रताप की चेतक पर सवार बड़ी मूर्ति को प्रमुख स्थान पर स्थापित करने की मांग के प्रति भी समर्थन का आश्वासन दिया। धन्यवाद ज्ञापन परिषद के महामंत्री श्री अरूण प्रकाश मल्लावत ने एवं संचालन श्री रूगलाल सुराना ने किया।

समारोह को सफल बनाने में सर्वश्री परशुराम मूंधड़ा, महावीर प्रसाद नारसरिया, सम्पत कुमार माणधन्या, अनुराग नोपानी, गोविन्द नारायण काकड़ा, वंशीधर शर्मा एवं रणजीत सिंह भूतोड़िया सक्रिय थे।

कोलकाता- राजस्थान दिवस के उपलक्ष में राजस्थान फाउण्डेशन द्वारा सप्ताह व्यापी कार्यक्रम आयोजित

३१ मार्च। राजस्थान फाउण्डेशन द्वारा राजस्थान दिवस के उपलक्ष में आयोजित सप्ताह-व्यापी कार्यक्रम के समापन समारोह में कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए वाममोर्चा के चेयरमैन श्री विमान बोस ने कहा कि बंगाल तथा राजस्थान का संबंध बहुत पुराना है। यह दो से तीन सौ साल से चला आ रहा है। राजस्थानियों का बंगाल के विकास में विशेष योगदान है तथा इस संबंध को और भी मजबूत करने की जरूरत है। श्री बोस को हल्दी घाटी से विशेष तौर पर लायी गयी पीली मिट्टी का कलश प्रदान कर सम्मानित किया गया।

विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित कोलकाता के मेयर श्री विकास रंजन भट्टाचार्य ने हल्दीघाटी की मिट्टी से भरे कलश प्राप्त करते समय उन्होंने कहा कि हल्दीघाटी की मिट्टी को देकर आप लोगों ने एक गुरुतर भार मुझ पर सौंपा है। महाराणा प्रताप का सम्मान करते हुए कोलकाता में महाराणा प्रताप की मूर्ति स्थापित की जाएगी। सिर्फ मूर्ति स्थापित करने से ही उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं हुआ जा सकता बल्कि उसकी उचित देखभाल भी आवश्यक है, जिससे उनका सम्मान हो। सामने मौत को देखते हुए भी 'चेतक' (महाराणा प्रताप का घोड़ा) ने उन्हें लेकर जीत की चाह में आगे और आगे बढ़ता गया। यह हमें सीख देता है कि महाराणा प्रताप की भांति सिर उठा के जीओ। श्री भट्टाचार्य ने मूर्ति हेतु स्थान को चिन्हित कर मूर्ति को शीघ्र ही स्थापित करने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम में लोकप्रिय गायिका सुचन्द्रा ने ''धरती धोरां री'' सहित कई राजस्थानी लोकगीत एवं राजस्थान से जुड़ी फिल्मी गीतों का गायन किया। लोकप्रिय टालीवुड अभिनेत्री ऋतुपर्णा सेनगुप्ता एवं उनकी टीम द्वारा राजस्थानी लोक-नृत्य, था घूमर का अभिनव प्रदर्शन किया गया। दर्शकों में बंगलादेश डिप्यूटी हाई कमिशनर से उप-राजदूत मुहम्मद इमरान, इटली के उप-राजदूत श्री अगस्तिनो पिन्ना, जर्मनी के श्री गुंटर विहर्मेन के अलावा बी.डी. सुरेका, हरिप्रसाद बुधिया, दीपचंद नाहटा, डा. प्रभा खेतान, प्रहलाद राय अग्रवाल, तिलोकचन्द डागा, संजय बुधिया, बालकृष्ण डालमिया, चन्द्रप्रकाश धानुका, सिद्धार्थ रामपुरिया, सीताराम शर्मा, शिवकुमार झुनझुनवाला, सुशील ढांढनिया, काशी प्रसाद खेरिया, कुंज बिहारी अग्रवल के अलावा महानगर के कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। राजस्थान फाउण्डेशन कोलकाता के अध्यक्ष श्री हरिमोहन बांगड़ ने अतिथियों एवं कलाकारों का स्वागत किया। सचिव श्री संदीप भूतोड़िया ने श्री विमान बोस एवं मेयर विकास रंजन भट्टाचार्य को राजस्थानी पगड़ी पहनाकर तथा डा. प्रभा खेतान ने हल्दीघाटी की मिट्टी से भरा कलश देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर महाराणा प्रताप की अश्वारोही मूर्ति के रूप में स्मृति-चिन्ह प्रदान किया गया। समारोह का संचालन कोलकाता में विशेष रूप से उपस्थित आल इंडिया रेडियो के राजस्थानी भाषा के संयोजक श्री दीपक जोशी ने किया।

कोलकाता- आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री की प्रथम पुण्य तिथि आयोजित

१७ अप्रैल। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री की प्रथम पुण्य तिथि पर एक स्मृति सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रो. श्यामलाल उपाध्याय, कवि श्री ज्योतिलाल खत्री, आचार्य शास्त्री के अनुज श्रीकान्त शास्त्री, कवि श्री मृत्युंजय उपाध्याय, श्री दिनेश ठक्कर, दाउलाल कोठारी, राजेन्द्र कानूनगो, प्रियंकर पालीवल, उम्मेद सिंह बैद, विधुशेखर शास्त्री, डा. वसुमति डागा, डा. कमलेश जैन, स्नेहलता वैद, छाया शर्मा आदि कवियों, लेखकों, चिन्तकों, बुद्धिजीवियों एवं सगे-संबंधियों एवं शुभचिंतकों ने आचार्य शास्त्री के बहुमुखी व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए उनकी निर्भीकता, दृढ़ता, आत्मीयता, वत्सलता के साथ-साथ सहजता, सरलता, समय के प्रति सजगता, सामाजिक एवं पारिवारिक दायित्वों का कुशलता पूर्वक निर्वाह आदि गुणों की चर्चा की एवं उनके प्रेरक व्यक्तित्व के अनेक प्रसंगों को उद्घाटित किया। इस अवसर पर पुस्तकालय की साहित्य मंत्री डा. उषा द्विवेदी ने स्व. शास्त्री की प्रिय कविता 'जिन्दगी तो मिल गयी चाही कि अनचाही' का पाठ किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आचार्य राधा मोहन उपाध्याय ने बताया कि आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री का सम्पूर्ण जीवन लोक मंगल को समर्पित था। उनका जीवन आदर्श एवं परिपूर्ण जीवन था। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती दुर्गा व्यास ने किया। पुस्तकालय के अध्यक्ष डा. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, महावीर बजाज, अरूण मल्लावत, लक्ष्मीकांत तिवारी, नन्दकुमार लढ़ा, त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, गजानंद राठी सहित महानगर के अनेकों साहित्यकार एवं श्रोतागण उपस्थित थे।

सम्मान/बधाई

कोलकाता : सीताराम शर्मा द्वारा राष्ट्रसंघ पर लिखी पुस्तक का राज्यपाल गोपालकृष्ण गांधी द्वारा विमोचन

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री गोपाल कृष्ण गाँधी सीताराम शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक का राजभवन, कोलकाता में विमोचन करते हुए। बाएं से दाएं- सीताराम शर्मा, राज्यपाल श्री गाँधी, संसदीय कार्यमंत्री श्री प्रबोध चन्द्र सिन्हा।

गत ७ अप्रैल को पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री गोपालकृष्ण गांधी ने श्री सीताराम शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक 'युनाइटेड नेशन्स : १०० पापुलर केश्चन एण्ड अन्सर्स' का राजभवन में आयोजित एक भव्य समारोह में विमोचन किया। राज्यपाल ने पुस्तक को एक महत्वपूर्ण प्रकाशन बताते हुए कहा कि आम आदमी को इससे राष्ट्रसंघ के विषय में आवश्यक जानकारी प्राप्त होगी। उन्होंने लेखक श्री शर्मा को बधाई देते हुए कहा कि राष्ट्रसंघ ने विश्वशान्ति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

लेखक श्री शर्मा बेलारूस गणराज्य के मानद कन्सुल जनरल एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं।

कोलकाता : श्री संतोष सराफ मर्चेन्ट चेम्बर आफ कामर्स के अध्यक्ष मनोनीत

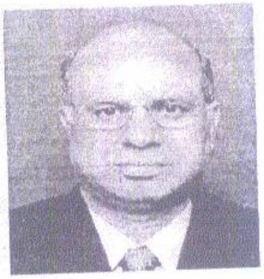

सुप्रसिद्ध व्यवसायी एवं समाजसेवी श्री सन्तोष सराफ के मर्चेन्ट चेम्बर आफ कामर्स कोलकाता के अध्यक्ष मनोनीत होने पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने उन्हें बधाई प्रेषित की। स्व. हनुमान चंद सराफ के सुपुत्र ५३ वर्षीय श्री सन्तोष सराफ वाणिज्य से स्नातक हैं एवं लयन्स क्लब आफ कोलकाता के पूर्व अध्यक्ष, कोलकाता लायन्स नेत्र निकेतन के चेयरमैन, इस्ट आल इंडिया ट्रान्सपोर्ट वेलफेयर एसोसियेशन के उपाध्यक्ष, आल इंडिया मोटर ट्रान्सपोर्ट कांग्रेस एवं कोलकाता गुड्स ट्रान्सपोर्ट एसोसियेशन की कार्यकारिणी के सदस्य तथा हिन्दुस्तान क्लब, कोलकाता स्वीमिंग क्लब कोलकाता पंजाब क्लब के सदस्य हैं। श्री सराफ शिव शक्ति सेवा समिति के सक्रिय सदस्य हैं।

दिल्ली : संदीप बना इण्डियन आइडल

इंडियन आइडल के लिए श्री संदीप आचार्य, बीकानेर, राजस्थान चुने गए यह देश-विदेश में बसे ९ करोड़ मारवाड़ियों के लिए गर्व की बात है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से श्री संदीप को इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाइयाँ एवं उज्वल भविष्य के लिए शुभ कामनाएं करते हुए सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने कहा कि आने वाले दिनों में इसी तरह से वे मारवाड़ी समाज का मस्तक ऊंचा करते रहेंगे। इसके लिए श्री संदीप को श्री सुरेका ने बधाई संदेश भेजा है।

रांची : श्रीमती राजेश दुलारी सान्दू को राजस्थानी महिला साहित्य पुरस्कार

२२ जनवरी २००६। भारतीय साहित्य विकास न्यास, रांची की ओर से राजस्थानी महिल साहित्यकार श्रीमती राजेश दुलारी सान्दू को उनकी काव्य कृति ''सपना रौ सिणगर'' के लिये चुरू में एक समारोह आयोजित कर सम्मानित किय गया। राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर के अध्यक्ष डा. देव कोठारी ने समारोह की अध्यक्षता की। न्यास के प्रतिनिधि श्री विश्वनाथ सरावगी ने न्यास की ओर से पुरस्कार प्रदान किये। राजस्थानी भाषा की महिला साहित्यकारों को प्रोत्साहित करने के लिये अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं समाजसेवी श्री हनुमान सरावगी ने अपनी मातुश्री (स्व.) गोदावरी देवी सरावगी की स्मृति में श्रीमती गोदावरी देवी सरावगी राजस्थानी महिला साहित्य सम्मान पुरस्कार की स्थापना की है। इन पुरस्कारों से प्रतिवर्ष राजस्थानी भाषा की महिला साहित्यकारों को ११,००० रु., शाल, श्रीफल और मानपत्र प्रदान कर सम्मानित किया जाता है।

शोक सभा/श्रद्धांजलि

कोलकाता : विजय मीमाणी का देहावसान

२९ मार्च। सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के वरिष्ठ सदस्य श्री केवलचन्द्र मीमाणी के ज्येष्ठ पुत्र विजय मीमाणी के आकस्मिक निधन पर सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका एवं राष्ट्रीय उपमहामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने श्रद्धांजलि ज्ञापित करते हुए स्व विजय मीमाणी को एक होनहार व्यवसायी एवं कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ता बताया। उन्होंने दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु एवं इनके शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए ईश्वर से उन्हें संबल प्रदान करने की प्रार्थना की।

शिवसागर : दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित

शिवसागर शाखा द्वारा निम्नलिखित दिवंगत आत्माओं की चिरशांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई।

२९.११.२००६ श्री ईश्वरचन्द लुणावत, सुपुत्र श्री संतोषचन्द्र लुणावत

१९.३.२००६ श्रीमती प्रेमलता मोजीका, धर्मपत्नी श्री खेमचन्द्र मोजीका

Wonder Images Pvt. Ltd.
we print on
FLEX
SAV
MESH
ONE-WAY VISION
FLOOR ETCHING
UK MEDIA
LAMINATION
CANVAS
Etc.
Contact :-
22155479
22155480
9830045754
9830051410
9830425990
9830768372
9830590130
9831854244
9231699624
154, LENIN SARANI,
KOLKATA-13
2nd Floor

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2004-06
Date of Publication- 28 APRIL 2006
RNI Regd. No. 2868/68

MACO GEL

Makesworth Industries Ltd.
'KAMALALAYA CENTRE'
Suite 504, 5th Floor
156A, Lenin Sarani, Kolkata-700 013

MACO GEL is a high profile product of **Makesworth Industries Ltd. (MIL),** a part of the Makesworth group that excels in distribution of Industrial oils, rubber hoses, plastics and allied products in eastern India.

MACO GEL in its various grades ... **most modern technology**. This ensur... and coatings. It has excellent water blocking... and minimising down time during cable proc...

The **MIL** plant located on the outskirts of Kol... of the art technology and R & D facilities.

MACO GEL—TH...

Category : Cable filling compounds. S... from high quality base oil and other hi-te... water blocking capacity over a wide te...

Application : The ideal water resista... Multipair Polyethylene insulated and sh... moisture into cable sheath damage occ...

Features : A homogeneous comp... antioxidant. Easy removal by wiping fro... Transparent, so does not obscure the co... insulation.
Fully compatible with polyethylene of medium and high density.
No unpleasant odour. No toxic or dermatic hazards.
Stable without migration.

FILL LONG LIFE INTO YOUR CABLE

S/F

All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Rd
(Kol - 700007)

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,

SRI RAJENDRA BARATH
MAA KARANI KUNJ
(MARTIA BERA KE PASS,
MAHA MANDIR
JODHPUR---342003
RAJSTHAN